



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)  
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 471]  
No. 471]

नई दिल्ली, सोमवार, जुलाई 31, 1989/स्रावण 9, 1911  
NEW DELHI, MONDAY, JULY 31, 1989/SRAVANA 9, 1911

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि वह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

राष्ट्रीय प्रावास बैंक

अधिसूचना

नई दिल्ली, 31 जुलाई, 1989

[राष्ट्रीय प्रावास बैंक अधिनियम, 1987 (1987 का अधिनियम सं. 53)  
के अधीन निर्गमित]

राष्ट्रीय प्रावास बैंक (बंधपत्रों का पुरोधण और प्रबंध) विनियम, 1989

का. अ. 600(ग्र)।—राष्ट्रीय प्रावास बैंक, राष्ट्रीय प्रावास बैंक अधिनियम, 1987 (1987 का 53) की धारा 55 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्ण अमूल्यन से श्री रमेश करकार से परामर्श करके, निम्नलिखित विनियम बनाता है, अर्थात् :

1. संक्षिप्त नाम और सारूप होना: (1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम राष्ट्रीय प्रावास बैंक (बंधपत्रों का पुरोधण और प्रबंध) विनियम, 1989 है।

(2) ये निम्नलिखित का लागू होंगे :

(क) राष्ट्रीय प्रावास बैंक द्वारा पुरोधृत और विक्रय की गई बंधपत्र शृंखला मं. 1 और ऐसी शृंखलाएँ जो राष्ट्रीय प्रावास बैंक द्वारा इन विनियमों के प्रश्न होने तक, पुरोधृत की जाएँ।

(घ) राष्ट्रीय प्रावास बैंक द्वारा इन विनियमों के प्रश्न होने की तारीख से पुरोधृत और विक्रय किए गए बंधपत्र।

2. परिमाणाएँ: इन विनियमों में, जब तक कोई वात विषय या संदर्भ के प्रतिकूल न हो : -

(क) "अधिनियम" से राष्ट्रीय प्रावास बैंक अधिनियम, 1987 (1987 का 53) अभिवृत है;

(ख) "बंधपत्र" से राष्ट्रीय प्रावास बैंक द्वारा अर्धानियम की धारा 15 की उआठारा (i) के खंड (क) के अधीन पुरोधृत और विक्रय किए गए बंधपत्र अभिवृत हैं।

(ग) "विवरित बंधाल" से एसा बंधपत्र अभिवृत है जिसे अपठनीय बना दिया गया है और जिसके मार्कान आग को अपाठ्य बना दिया गया है और किसी बंधपत्र के सारांश आग बैंक, जहाँ—

(i) बंधपत्र का संख्याक, पुरोधण जिससे वह संबंधित है और उसका अंकित भूत्य या ड्याज का सदाय अभिवृत है; या

(ii) पृष्ठांकन या पाने वाले का नाम लिखा जाता है; या

(iii) नवीकरण रसीद या अन्तरण झापन दिया जाता है।

(घ) "प्रलय" से इन विनियमों की अनुसूची में उपलब्धि कोई प्राप्त अभिवृत है;

- (३) "गृह बंधपत्र" से ऐसा बंधपत्र अभिप्रेत है जो आवास में तुम हो गया है और इससे ऐसा बंधपत्र अभिप्रेत नहीं है जो आवास के प्रतिकूल किसी व्यक्ति के कहने में है;
- (४) "विहृत बंधपत्र" से ऐसा बंधपत्र अभिप्रेत है जिसका सार्वान भाग नष्ट हो गया है, कट गया या नुकसानप्रद हो गया है;
- (५) "पुरोधरण कार्यालय" से राष्ट्रीय आवास बैंक का वह कार्यालय अभिप्रेत है जिसकी बहियों में कोई बंधपत्र रजिस्ट्रीकूल किया जाता है या रजिस्ट्रीकूल किया जा सकता है;
- (६) "स्टाक प्रमाणपत्र" से विनियम १३ के अधीन पुरोधृत स्टाक प्रमाणपत्र अभिप्रेत है।
३. बंधपत्र का प्रकार और उसके अंतरण का हंग, प्राप्ति—(१) बंधपत्र निम्नलिखित प्रकार में पुरोधृत किया जा सकता :—
- (अ) बचनपत्र जो अमुक व्यक्ति को या उसके आवेदन से संदेश हो; या
- (ब) राष्ट्रीय आवास बैंक की बहियों में रजिस्ट्रीकूल स्टाक के लिए स्टाक प्रमाणपत्र।
- (२) (१) बचनपत्र के रूप में पुरोधृत बंधपत्र पृष्ठांकन और वरिचार द्वारा उसी प्रकार अंतर्लीय होगा जिन प्रकार बचनपत्र आवेदन पर संदेश होता है।
- (२) बचनपत्र के रूप में पुरोधृत बंधपत्र पर कोई भी लेखन परकारण के प्रयोजन के लिए विधिमान्य नहीं होगा, यदि ऐसा लेखन बंधपत्र द्वारा अंकित रकम के केवल एक भाग को अंशरूप करने के लिए तात्परित हो।
- (३) स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में पुरोधृत और राष्ट्रीय आवास बैंक की बहियों में रजिस्ट्रीकूल कोई बंधपत्र, प्रकार १ में अंतरण की लिखत के निष्पादन द्वारा या तो पूर्वेतः या आवेदन अंतर्लीय होगा। ऐसी वजा में अंतरक स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में पुरोधृत बंधपत्रों का, जिससे अंतरण संबंधित है, घारक तब तक समझा जाएगा जब तक कि अंतरिती का नाम राष्ट्रीय आवास बैंक में रजिस्ट्रीकूल नहीं हो जाता है।
- (४) (क) इसमें प्रतिकूल किसी बात के होने क्षुण्डी, राष्ट्रीय आवास बैंक, बंधपत्रों के हकदार किसी व्यक्ति के अनुरोध पर, राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा रखे जाने वाले जाते में बंधपत्रों के हकदार व्यक्ति के नाम पर प्रविष्टि के रूप में बंधपत्र पुरोधृत कर सकते हैं।
- (क) बंधपत्रों द्वारा भारंग में बंधपत्रों के लिए प्रतिशुनि के समय पर या बाद में पुरोधृत बंधपत्रों की बचन पत्र या स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में संपरिवर्तन द्वारा राष्ट्रीय आवास बैंक की जाता बहियों में एक प्रविष्टि के रूप में पुरोधृत बंधपत्र किया जा सकते हैं।
- (ग) यदि कोई बंधपत्र पहले ही बचनपत्र के रूप में पुरोधृत किया जा चुका है तो ऐसा बंधपत्र घारक जो उसे राष्ट्रीय आवास बैंक के पास जाते में प्रविष्टि के रूप में छारण करने का इच्छुक है।

बंधपत्र को राष्ट्रीय आवास बैंक की जाता बहियों में एक प्रविष्टि के रूप में धारित किए जाने के लिए प्रकार २ में अध्ययेदा करेगा और राष्ट्रीय आवास बैंक के पक्ष में सम्बन्धित प्रांतीकित बंधपत्र को प्रत्यक्षित कर देगा।

- (घ) यदि बंधपत्र स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में पुरोधृत किया गया है तो आरक बंधपत्र को राष्ट्रीय आवास बैंक के पक्ष में इस प्रभुरोध के साथ प्रतिरक्षित किया जाएगा। यदि बंधपत्र को 'राष्ट्रीय आवास बैंक' द्वारा जो 'जारी वाले जाते' में एक प्रविष्टि के रूप घारक के नाम पर धारित किया जा सकेगा।
- (ङ) राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा रखे जाने वाले जाते में एक प्रविष्टि के रूप में बंधपत्रों के पुरोधृत धारण करने वाला कोई व्यक्ति, प्रकार ३ में अंतरेतन करके, बंधपत्रों को बचनपत्र या स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में अंतरित या संपरिवर्तित करने या इसके विषयमें [लिए] कोई फीस प्राप्त नहीं है।
- (ज) राष्ट्रीय आवास बैंक की जाता बहियों में एक प्रविष्टि के रूप में बंधपत्रों के पुरोधृत धारण किए या बचनपत्र या स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में पहले से पुरोधृत बंधपत्रों को राष्ट्रीय आवास बैंक की बहियों में एक प्रविष्टि के रूप में संपरिवर्तित करने या इसके विषयमें [लिए] कोई फीस प्राप्त नहीं है।
- (झ) राष्ट्रीय आवास बैंक की बहियों में एक प्रविष्टि के रूप में बंधपत्रों के पुरोधृत धारण किए या बचनपत्र या स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में पहले से पुरोधृत बंधपत्रों को राष्ट्रीय आवास बैंक की बहियों में एक प्रविष्टि के रूप में संपरिवर्तित करने या इसके विषयमें [लिए] कोई फीस प्राप्त नहीं है।
- (ञ) (१) बंधपत्र राष्ट्रीय आवास बैंक के धार्यका के हस्ताक्षर से जारी किया जाएगा और ऐसे मुद्रित उत्कीर्ण या शिक्षा-मुद्रित या ऐसी अन्य यांत्रिक प्रक्रिया द्वारा लागित किया जा सकेगा जैसा राष्ट्रीय आवास बैंक निषेध करें।
- (२) इस प्रकार मुद्रित, उत्कीर्ण, शिक्षा-मुद्रित या अन्य रूप में लागित हस्ताक्षर वैसे ही विधिमान्य होंगे। ऐसे मामलों में अंतरण को उन बंधपत्रों का जिनसे अंतरण संबंधित है, ऐसे समय तक आरक समझा जाएगा जब तक कि अंतरिती का नाम राष्ट्रीय आवास बैंक की बहियों में दर्ज नहीं कर लिया जाना है।
- (३) (१) बंधपत्र राष्ट्रीय आवास बैंक के धार्यका के हस्ताक्षर से जारी किया जाएगा और ऐसे मुद्रित उत्कीर्ण या शिक्षा-मुद्रित या ऐसी अन्य यांत्रिक प्रक्रिया द्वारा लागित किया जा सकेगा जैसा राष्ट्रीय आवास बैंक निषेध करें।
- (२) इस प्रकार हस्ताक्षर वैसे ही विधिमान्य होंगा मानीं वह स्वयं व्यवस्थापनकर्ता के मुद्रित हस्ताक्षर द्वारा अंतरित है।
- (४) बचनपत्र के रूप में किसी बंधपत्र का कोई पृष्ठांकन या स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में किसी बंधपत्र की दशा में अंतरण की कोई सिल्लत स्थित तक जब तक कि बह आरक या उसके सम्बन्धित नियत अटर्नी या प्रतिरिक्षित के हस्ताक्षर द्वारा बचनपत्र के रूप में बंधपत्र की दशा में बंधपत्र के वीचे और स्टाक प्रमाणपत्र की दशा में अंतरण की लिखत पर अंतरित नहीं कर ली जाती है।
४. न्याय जिन्हें मान्यता प्राप्त नहीं है:—(१) राष्ट्रीय आवास बैंक किसी बंधपत्र की जाति उसमें आरक के पूर्ण अधिकार को छोड़कर, किसी न्याय या किसी अधिकार को किसी भी रूप में, उसकी सूचना दिए जाने पर भी, मान्यता देने के लिए बाध्य या विवेद नहीं होगा।
- (२) उपनियम (१) के उपबन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले जिना, राष्ट्रीय आवास बैंक अनुमति के रूप में और राष्ट्रीय आवास बैंक पर कोई बाध्यता के बिना, स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में पुरोधृत बंधपत्र के बाध्यता के भावाय के लिए या स्टाक प्रमाणपत्र पर संबंधित ऐसे मामलों के अंतरण के संबंध में, ऐसे निदेश अपनी बहियों में प्रतिविवित कर लेंगे, जैसे राष्ट्रीय आवास बैंक उचित समझे।

5. न्यासियों या पश्चात्यार्थियों द्वारा स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में पुरोषूत को भारण करने के लिए उपबंध :—

(1) स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में बंधपत्र को किसी पद धारक द्वारा —

(क) राष्ट्रीय आवास बैंक कई बहियों और स्टाक प्रमाणपत्र में न्यासी के रूप में चाहे प्रपत्र आवेदन में विनिर्दिष्ट आवास के किसी न्यासी के रूप में या चाहे किसी ऐसे वर्गीकरण के बिना, न्यासी के रूप में, बंधन अपने नाम पर भारण किया जा सकता है।

(ख) अपने पदनाम पर भारण किए जा सकता है।

(2) राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा अपेक्षित प्रकल्प में राष्ट्रीय आवास बैंक को लिखित रूप में आवेदन किए जाने पर, उस व्यक्ति द्वारा, जिसके नाम में बंधपत्र है, बंधपत्र के अध्ययन कर किए जाने पर राष्ट्रीय आवास बैंक —

(क) अपनी बहियों में ऐसी प्रविष्टि कर सकेगा जिसमें उसे किसी विनिर्दिष्ट न्यास का न्यासी या किसी न्यास के विनिर्देश के बिना, न्यासी किया गया होगा और उसके नाम पर स्टाक प्रमाणपत्र पुरोषूत कर सकेगा। जिसमें यथास्थिति, न्यास के विनिर्देश सहित या रहित न्यासी के रूप में उसका बर्णन होगा; या

(ख) आवेदक के अनुरोध के अनुसार, उसके पद के नाम पर उसे स्टाक प्रमाणपत्र पुरोषूत कर सकेगा और अपनी बहियों में प्रविष्टि कर सकेगा जिसमें उसे उसके पद के नाम पर स्टाक धारक बंधित किया गया है, परन्तु यह तब जरूरि —

(i) अनुरोध इसके उपविनियम (i) के उपबंधोंके अनुरूप हो,

(ii) राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा उपविनियम (7) के निर्बंधनानुसार अपेक्षित आवश्यक साथी दी गई हो, और

(iii) बंधपत्र, यदि यह बंधनपत्र के रूप में हो तो, राष्ट्रीय आवास बैंक के पक्ष में पृष्ठाक्षित किया गया हो और यदि स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में हो तो उसे रजिस्ट्रीकूट धारक द्वारा प्रकल्प 5 में प्राप्त किया गया है।

(3) उपविनियम (i) के अधीन स्टाक प्रमाणपत्र पर धारक द्वारा प्रकल्प के किसी भी व्यक्ति या व्यक्तियों के साथ या कोई पद भारण करने वाले किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के साथ संयुक्त रूप से भारण किया जा सकता।

(4) जब स्टाक किसी व्यक्ति द्वारा अपने पद के नाम पर भारण किया जाता है तब संबद्ध स्टाक प्रमाणपत्र से संबंधित कोई वस्तावेज तत्त्वमय पद धारण करने वाले ऐसे व्यक्ति द्वारा नाम से जिसमें स्टाक प्रमाणपत्र धारित किया जाता है, निष्पादित को जा सकता है भालो उसके स्वयं के नाम का ही कथन किया गया है।

(5) वहाँ किसी ऐसे स्टाक प्रमाणपत्र धारक द्वारा जिसे राष्ट्रीय आवास बैंक की बहियों में न्यासी या पश्चात्यार्क के रूप में बंधित किया गया है, निष्पादित किए जाने के लिए तात्पर्यपूर्णता कोई अंतरण लिखेत्वा, मुक्तारानामा या अन्य वस्तावेज राष्ट्रीय आवास बैंक का समक्ष प्रस्तुत किया जाता है वहाँ राष्ट्रीय आवास बैंक का कार्य इस बात की ओर पड़ता है जहाँ सही होगा कि न्यास के प्रदान करने के लिए या ऐसा विलेख या अन्य वस्तावेज निष्पादित करने के लिए हकदार है और वह अंतरण लिखेत्वा, मुक्तारानामा या वस्तावेज पर उसी रोति से कोई कोई कार सकेगा भालो निष्पादक स्टाक प्रमाणपत्र धारक है और वहाँ स्टाक प्रमाण पत्र धारक को अंतरण लिखेत्वा, मुक्तारानामा या वस्तावेज में न्यासी के रूप या पद धारक के रूप में बर्णित किया गया ही या न तिना गवा ही

और चाहे यह न्यासी या पद धारक को भालो हैसियत में अंतरण लिखेत्वा, मुक्तारानामा या वस्तावेज निष्पादित करने के लिए तात्पर्यपूर्णता है या तात्पर्यपूर्णता नहीं है।

(6) किसी न्यास या किसी वस्तावेज या नियमों के अन्वेषण किसी न्यासी या पद धारकों या किसी न्यासी या पद धारकों और हिन्दूधारीय आवास बैंक के बीच इस विनियम को किसी बात से यह नहीं समझा जाएगा कि यह न्यासियों या पद धारकों को उसमें विभान्न कार्य करने के लिए प्राधिकृत करती है जो न्यास को लागू किया जाएगा कि स्टाक प्रमाणपत्र धारक एक पदधारक है, न्यासित करने वाले नियमों के अनुसार है, और न हो राष्ट्रीय आवास बैंक या किसी स्टाक प्रमाणपत्र में कोई हिन्दूधार भारण करने या अंजित करने वाले कोई व्यक्ति किसी स्टाक प्रमाणपत्र के या किसी स्टाक प्रमाणपत्र धारक के संबंध में राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा रखे गए किसी रजिस्टर में किसी बात के करण से हैं, किसी न्यास के या किसी स्टाक प्रमाणपत्र धारक को वैश्वासिक हैसियत की या किसी स्टाक प्रमाणपत्र के भारण से संलग्न किसी वैश्वासिक बाध्यता की सुवना से प्रभावित होगा।

(7) इस विनियम के अनुसरण में, किसी व्यक्ति द्वारा किसी पद के धारक के रूप में किए गए किसी आवेदन पर या निष्पादित किए जाने के लिए तात्पर्यपूर्णता किसी वस्तावेज पर कारंबाई करने के पूर्ण, राष्ट्रीय आवास बैंक यह साथ प्रस्तुत करने की ओर भालो कर सकेगा कि ऐसा व्यक्ति तत्त्वमय उस पद का धारक है।

6. न्यास या न्यासियों द्वारा बंधनपत्रों के रूप में पुरोषूत बंधपत्रों को भारण करने के लिए उपबंध :—

(1) विनियम 4 के विनियम (1) के उपबंधों पर प्रतिहूल प्रभाव लाने विना, राष्ट्रीय आवास बैंक, आवेदक के अनुरोध पर और राष्ट्रीय आवास बैंक को वापिस्तावीन बनाए बिना, यथास्थिति, किसी विनिर्दिष्ट न्यास या उस न्यास के न्यासी (न्यासियों) के नाम पर या आवेदक के द्वय के नाम पर, उस न्यासी बताते हुए चाहे यह उसके आवेदन में विनिर्दिष्ट न्यास के न्यासी के रूप में ही या ऐसे विनिर्देश के बिना किसी न्यासी के रूप में ही बंधनपत्र के रूप में बंधपत्र पुरोषूत कर सकेगा।

(2) यहाँ बंधनपत्र के रूप में कोई बंधपत्र किसी धारक के स्वयं के नाम पर है वहाँ राष्ट्रीय आवास बैंक, धारक द्वारा राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा अपेक्षित प्रकल्प में किए गए किसी आवेदन पर और ऐसा बंधनपत्र अध्ययन करने पर इसके उपविनियम (1) में अधिकृत रूपता में, बंधनपत्र के रूप में नवीकृत बंधपत्र पुरोषूत कर सकेगा :

परन्तु यह तब जरूरि —

(i) इसके उपविनियम (6) के विवरणानुसार राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा अपेक्षित, आवश्यक साथी दी गई ही, और

(ii) बंधपत्र को राष्ट्रीय आवास बैंक के पक्ष में पृष्ठाक्षित किया गया हो।

(3) उपविनियम (1) के अधीन बंधपत्र को किसी न्यास के न्यासी द्वारा अपेक्षित या उस न्यास के न्यासियों के रूप में किसी अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों के साथ संयुक्त रूप में धारित किया जा सकता।

(4) जहाँ वचनपत्र के रूप में किसीं बंधपत्र को जो न्यासों के रूप में बंधपत्र धारक द्वारा पृष्ठांकित किए जाने के लिए तात्पर्यत है, राष्ट्रीय भावास बैंक के समझ प्रस्तुत किया जाता है वहाँ या जहाँ किसीं मुख्यतामात्रा या अन्य वस्तविकों को जो बंधपत्र धारक द्वारा निष्पादित किए जाने के लिए तात्पर्यत है, राष्ट्रीय भावास बैंक का कार्य इस बात की जांच पड़कर करना नहीं होगा कि क्या बंधपत्र धारक किसी न्यास या दस्तावेज के निम्नलिखितों के अंदर या नियमों के पृष्ठांकित करने का या ऐसा मुख्यतामात्रा या अन्य दस्तावेज निष्पादित करने का हक्कार है और वह पृष्ठांकित मुख्यतामात्रा या दस्तावेज पर उसी रोति से कार्य कर सकता भानी ऐसा पृष्ठांकित बंधपत्र धारक है और जहाँ बंधपत्र धारक को पृष्ठांकित, मुख्यतामात्रा या दस्तावेज में न्यासों के रूप में वर्णित किया गया हो या न किया गया हो और जहाँ वह न्यासों को अपनी वैसियत में पृष्ठांकित करने या मुख्यतामात्रा या दस्तावेज निष्पादित करने के लिए तात्पर्यत है या तात्पर्यत नहीं है।

(5) किसीं न्यास या किसीं दस्तावेज या नियमों के अंदर किन्हीं न्यासियों और हितधिकारियों के बीच इन विनियमों को किसी बात से यह नहीं समझा जाएगा कि वह न्यासियों को उससे निन्न कार्य करने के लिए प्राधिकृत करते हैं जो न्यास को साझा विभिन्न नियमों के या न्यास का गठन करने वालों लिखित के निम्नलिखितों के मनुष्यरूप हैं।

(6) इस विनियम के अनुसार में कीर्ति द्वारा किसी न्यास के न्यासों के रूप में निए गए किसी अवैदेत पर कार्य करने के पूर्व राष्ट्रीय भावास बैंक वह संशय पैदा करने की अनेक कर सकता कि ऐसा अवैदेत उस न्यास का तत्त्वमय न्यास है।

7. धारक बनाए जाने से निर्भावित अवैदेत :

कोई अवैदेत और ऐसा कोई अवैदेत जो किसी सक्रम न्यासान्वय द्वारा विचुल्त चिह्न पाया गया है बंधपत्रों का धारक होने के लिए हक्कार नहीं होगा।

#### 8. भावज का संबंध :

(1) बंधपत्र के रूप में बंधपत्र पर भावज का संबंध बंधपत्र प्राप्तिकर्ता में विनिर्दिष्ट पुरोधारण का वर्तित या राष्ट्रीय भावास बैंक के किसी अन्य कार्यालय द्वारा बंधपत्र के धारक द्वारा ऐसी औरतानिकानाओं का पालन करने के अधीन रहते हुए, जिनकी राष्ट्रीय भावास बैंक प्रयोग करे, और बंधपत्र प्रस्तुत करने पर किया जाएगा।

(2) स्टॉक प्रमाणपत्र के रूप में बंधपत्र पर भावज का संबंध राष्ट्रीय भावास बैंक द्वारा जरी किए गए अधिविधों (वरंट) द्वारा किया जाएगा और जो राष्ट्रीय भावास बैंक से धारक द्वारा वह के मनुसूचित बैंक के स्थानीय कार्यालय में संबंध होता है। भावज का संबंध करते समय स्टॉक प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना अवश्यक नहीं होता किन्तु पाने वाले अधिविध के बीच तरक्क प्राप्ति की अभिस्वीकृति देगा।

(3) राष्ट्रीय भावास बैंक की बहियों में एक प्रविष्टि के रूप में अवैदेत पर अंज राष्ट्रीय भावास बैंक द्वारा पाने वाले के बातों में देय रेताकिस अधिविध जरी करके या ऐसी अन्य रीति से जो राष्ट्रीय भावास बैंक द्वारा करार पाई जाए, संबंध किया जाएगा।

9. प्रक्रिया, जहाँ वचनपत्र के रूप में बंधपत्र गुम हो जाता है, प्रदिः  
(1) किसी ऐसे बंधपत्र के जिसके पूर्णतः या अंततः गुम, भोरी, नष्ट, विफल हो जाने का अभिकरण है, स्थान पर दूसरी प्रति जारी

करने के लिए प्रत्येक भावेतनपत्र पुरोधारण का यालिय को भेजो जा एगा और उसमें निम्नलिखित विशिष्टियाँ होंगी, प्रथमतः—

(क) निम्नलिखित प्रकृति के अनुसार बंधपत्र की विशिष्टियाँ—

प्रतिशत राष्ट्रीय भावास बैंक बंधपत्रों का ..... बैंक का बंधपत्र से .....

(ख) पिछला अर्थ वर्ति जिसके लिए व्याज संवेदन किया गया है;

(ग) वह अवैदेत जिसको ऐसे व्याज संदेत किया गया था;

(घ) वह अवैदेत जिसके नाम पर बंधपत्र पुरोधारण किया गया था यदि जात हो ;

(इ) वे परिस्थितियाँ जिनके क्र.रन हानि, भोरी, विनाश, विक्रपकरण या विफलत हुई हैं; और

(ब) क्या हानि या भोरी की पुलिस को रिपोर्ट की गई थी।

(2) ऐसे भावेतनपत्र के साथ निम्नलिखित संलग्न होंगे—

(क) जहाँ बंधपत्र रजिस्ट्रीकूट डक से भेजने के दौरान गुम गया है वहाँ उस पत्र को जिसमें बंधपत्र है, उक्कवर रजिस्ट्री रेसीद;

(ख) यदि पुलिस को हानि या भोरी की रिपोर्ट को गई हो तो पुलिस रिपोर्ट की एक प्रति;

(ग) यदि भावेतक रजिस्ट्रीकूट धारक नहीं है तो मजिस्ट्रेट के समझ पर हुए कि भावेतक बंधपत्र का अस्तित्व विधिक धारक है, शपथ पर लिया गया शपथपत्र और रजिस्ट्रीकूट धारक के इक का पता लगाने के लिए भावेतक बंधपत्र के बास्तवीकरण; और

(घ) ऐसा भाग या खंड यो गुम, भोरी, नष्ट, विफलत या विफल हुए बंधपत्र का अवशेष ही।

(3) यदि ऐसे अंज पुरोधारण का यालिय द्वारा संदेय नहीं है तो भावेतन की एक प्रति राष्ट्रीय भावास बैंक के उस का यालिय को भी भेजो जहाँ अंज संदेय है। परन्तु भावेतन के साथ संलग्न अनुसन्धानों की प्रतियाँ भेजना अवश्यक नहीं होगा।

10. राजपत्र में अधिसूचना—वचनपत्र के रूप में बंधपत्र या बंधपत्र के भाग की हानि, भोरी, विनाश, विफलत या विफलण को भावेतक द्वारा भारत के राजपत्र के या उस स्थान के जहाँ हानि, भोरी, विनाश, विफलत या विफलण हुए हैं, स्थानीय राजपत्र, यदि कोई हो, के तोन अमुकिम अंकों में तुरन्त अधिसूचित किया जाएगा। ऐसी अधिसूचना निम्नलिखित प्रकृति में या लम्बग बैंक द्वारा प्ररूप में होगी जैसी परिस्थितियाँ अनुभास करें:

“गुम गया है” (यालियति “भोरी हो गया है”), “नष्ट हो गया है”, विफल हो गया है”, या “विफलत हो गया है”) ..... प्रतिशत राष्ट्रीय भावास बैंक बंधपत्र से ..... के जो ..... ड. का है, मूल रूप से ..... के नाम में है और अंतिम धार ..... स्वतंत्रारी को पृष्ठांकित या, उसके द्वारा वह किसी अन्य अवैदेत को गुम जाने/भोरी/नष्ट/विफल/विफलत हो जाने के कारण कभी पृष्ठांकित नहीं किया गया था, इसके द्वारा यह सूचना भी जाती है कि उपर्युक्त बंधपत्र और उस पर अंज का भगतान पुरोधारण का यालिय में रोक किया गया है और यह कि दूसरी प्रति जरी किए जाने के सिए स्वतंत्रारी के पक्ष में भावेतन किया जाने बाला है या किया गया है। अनेकों को उपर्युक्त बंधपत्र बोरीदाने या अन्यथा बोरी हर करने से संबंधित किया जाता है। अधिसूचना जाती करने वाले अवैदेत का काम ..... निम्नांस स्थान .....

11. बंधवत्र को बुसरी प्रति जरी करना और सतिरूपि सेना: विन्द-  
यम 10 में विहित अनियम भविष्यतवाना के प्रकाशन के पश्चात विहित  
अधिकरी, यदि उसे बंधवत्र की हत्ति, जोरी, विनाश, विकृति या विरुद्ध  
की ओर प्रावेदक के रूप में स्थाय होने की सूचना दी जाती है तो वह  
विनियम 13 के प्रबोन प्रकाशित सूची में बंधवत्र की विशिष्टियां सम्मिलित  
करद एगा और पुरोधरण कार्यालय को आवेदा देगा कि वह—

(क) यदि बंधपत्र का केवल एक भाग गुम, चोरी, नष्ट, विहृत या विरुद्धित हुआ है और उसका कोई ऐसा भाग जो उसकी पहचान के लिए पर्याप्त है, प्रस्तुत किया गया है तो, विनियम 13 के अधीन सूची के प्रकाशन के ठीक पक्षात् या ऐसी अवधि की समय पर जो विहृत अधिकारी उक्त सूची के प्रकाशन की तरीक से अवश्यक समझे, इसमें इसके पक्षात् विषय अतिरूपि बंधपत्र के नियम यह पर, आवेदक को अपार का संकाय करे और उसके बंधपत्र के बदले में जिसका एक भाग गुम, चोरी, नष्ट, विहृत या विरुद्धित हो गया है, बंधपत्र को एक दूसरी प्रति पुरोधत करे।

(क) यदि इस प्रकार गुमे, चोरी, नष्ट, विहृत या विरुद्धित हुए बंधपत्र का कोई भाग जो उसकी पहचान के लिए पर्याप्त हो, प्रस्तुत नहीं किया गया है तो:—

(i) इस प्रकार गुमे, बोरो, नष्ट, किछुत या विहृपित हुए बंधपत्र के बारे में, उक्स सूची के प्रकाशन के दो वर्ष पश्चात और इसमें इसके पश्चात विहृत रीति में अतिपूर्ण बंधपत्र के निष्पदन पर, धन्वेक को इसमें आगे यथाउपबंधित चार वर्ष की समर्पित तक व्याज का संदाय करें; और

(ii) इस प्रकार गृहे, चोरी, मण्डि, विहृत मा विस्तृप्त हुए बंधपत्र के स्थान पर अवैक को उक्त सूची के प्रकाशन की तारीख के चार वर्ष पर्याप्त दूसरी प्रति जारी करें। परन्तु यह तब जारी कि

(i) यदि वह तारीख जिसको बंधपत्र प्रतिसंदेश के सिए प्रोटोकॉल है, उस तारीख से पहले पढ़ती है जिसको भारत वर्ष की उम्मीद प्रदर्शन सम्पत्ति होती है तो विनिहित प्रधिकारी, पूर्वतर तारीख के छह सप्ताह के भीतर बंधपत्र पर देय मूल रकम को डाकघर बचत बैंक में अवश्य यथि प्राप्तेक ऐसा बाहुदाह है तो राष्ट्रीय आब स बैंक द्वारा जारी किए गए बंधपत्रों में जो उस तारीख से जिसको दूसरी प्रति दी जानी है, पहले प्राप्तिकरन नहीं रहते हैं, विनिहित करेगा और इस रकम का और उसके साथ उस पर प्रोटोकॉल उस घटना का जो ऐसे बैंक में या ऐसे बंधपत्रों में किनमें विनिधान किया गया है, संदाय प्राप्तेक को ऐसे समय पर करेगा जब अन्यथा बंधपत्र की दूसरी जारी कर दी गई होती; और

(ii) यदि बंधपत्र की द्वितीय प्रति के पुरोधात् किए जाने के पूर्व किसी समय मूल बंधपत्र का पता चल जाता है या अन्य कारणों से पुरोधात् कार्यालय को ऐसा प्रतीत होता है कि आदेश विरुद्धित किया जाना चाहिए, तो मला पागे विकार के लिए विहित भविकारी को निवेदित किया जाएगा और इस दोष आदेश पर सही कर देंगे।

पारित कोई भावेष उसमें निविष्ट चार वर्ष की अवधि की समाप्ति पर, अन्तिम हो जाएगा, जब तक कि उसे इस बीच विशेषित या अस्थाय उत्तरित नहीं कर दिया जाता है।

(2) विहित प्रधिकरी, बंधवपत्र की दूसरी प्रति जारी करने के पूर्व किसी समय, यदि कहु पर्याप्त कारण पाता है तो, इस विनियम के प्रधीन उसके द्वारा किए गए किसी भावेश को परिवर्तित या रद्द कर सकेगा और यह निवेश भी वे सकेगा कि बंधवपत्र की दूसरी प्रति जारी करने के पूर्व अंतराल का विस्तार बार बर्यं से अनधिक की ऐसी प्रवधि तक किया जाएगा जैसा धृ उचित समझे।

( 3 ) असिपूतियाः—

(i) (क) जब उपविनियम (ब) (I) के प्रधीन मिलायित होता तब ब्याज की रकम की दुगनी होती, प्रथम अंधपत्र पर प्रोप्रभृत हो गए सभी पूर्ववर्ती ब्याज की रकम का दुगना धन उस पर उम्र प्रवधि के दौर न दो बधरत की दूसरी प्रति पुरोधृत की जा सकने के पूर्व व्यक्तिस करती होती, शोषण होते क्षेत्र सभी ब्याज की रकम का दुगना; और

(ब) सभी भव्य मामलों में, अधिकार के अंकित मूल्य की दुगनी धन संड (क) के भव्यांक संगीत व्याज की एकमी दुगनी होंगी।

(ii) विहित अधिकारी यह नियंत्रण कर सकेगा कि ऐसी कालिपूर्ति प्रक्रिये घट बैद्धक द्वारा या अवैद्यक और उसके द्वारा अनुमोदित एक या दो प्रतिमतों द्वारा, जैसे: यह उचित समझे, निष्पादित की जाएं।

12. स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में बंधपत्र के गुम हो जाने, आदि के सभी प्रक्रिया:

(1) किसी स्टाक प्रसारणपद के जिसके पूर्णतः या मात्रातः, गुम, चोरी, नडट, विहृत या विस्फैट हो जाने का अभिक्षयन है, के स्थान पर दूसरी प्रति जारी करने के लिए प्रत्येक प्रावेदन पुरोधरण कार्यालय को भेजा जाएगा और उसके साथ निम्नलिखित संलग्न किया जाएगा:

(क) यदि वह पत्र जिसमें स्टॉक प्रमाणपत्र है, रजिस्ट्री डाक से भेजने में गुम हो गया है तो, उसकी डाकघर रजिस्ट्री रसीद:

(क) यदि पुलिस को गूम हो जाने या जोरी की रिपोर्ट की गई हो तो पुलिस रिपोर्ट की प्रति;

(ग) मजिस्ट्रेट के समक्ष यह "साक्ष देते हुए कि आवेदक स्टाफ प्रमाणपत्र का विधिक धारक है और यह कि स्टाफ प्रमाणपत्र न तो उसके कम्बे में है और न ही उसके पारा अंतरिम, गिरधीरी या अस्थिया छ्वारा किया गया है, जिसका गया अपथपत्र, और

(ग) कोई ऐसे भाग या छाँड़ जो शुम, चारा, खट्ट, वरकून  
या विस्फित छाए स्टॉक प्रमाणपत्र के प्रबोश हों।

(2) घावेल 'मेरे उन परिस्थितियों' का कथम किया जाएगा जिनकी वजह से हाति हुई है।

( ३ ) यदि विहित प्रधिकारी का स्टाक प्रमाणपत्र की हानि, जोरी, दिशालक्ष विकृति या विस्तरण के संबंध में समाधान ही जाता है तो वह मूल प्रमाणपत्र के बदले में स्टाक प्रमाणपत्र की वृद्धिरी प्रधिकारी करने का विवेच करें ।

## 13. सूची का व्रकाशन :

- (1) विनियमन 11 में निर्दिष्ट सूची भारत के राजपत्र में जनवरी और जुलाई मास में या उसके पश्चात् याचकीदार, जैसा सुनिश्चित हो, मर्द वाणिक रूप से प्रकाशित की जाएगी।
- (2) सभी बंधपत्र जिनकी बाबत विनियम 11 के अधीन कोई आवेदन पारित किया गया है, ऐसे आवेदन के पारित किए जाने के ठीक पश्चात् प्रत्याशित पहली सूची में सम्मिलित किए जाएंगे और उसके पश्चात् ऐसे बंधपत्र प्रत्येक प्रत्युती सूची में तब तक सम्मिलित किए जाने के लिए बने रहेंगे जब तक कि प्रथम प्रकाशन की तारीख से बार बार समाप्त नहीं हो जाते हैं।
- (3) सूची में, उसमें सम्मिलित किए गए प्रत्येक बंधपत्र के बारे में निम्नलिखित विविधियाँ, होती, अर्थात्, पुरोधरण का नाम, बंधपत्र का संबंधक, उसका मूल्य, उस व्यक्ति का नाम जिसकी बंधपत्र पुरोधात् किया गया है, वह तारीख जिससे उसमें व्याज मिलता है, दूसरी प्रति के लिए आवेदक का नाम, व्याज के संवाय और दूसरी प्रति जाने के लिए विविहित अधिकारी द्वारा भारित किए गए आवेदन का संबंधक और तारीख, और उब सूची के जिसमें बंधपत्र पहली बार सम्मिलित किया गया था, प्रकाशन की तारीख।

## 14. दूसरी प्रति जारी करने की अपेक्षा करने वाले बंधपत्र के रूप में किसी विहृत बंधपत्र का अधिकारण :

विहृत अधिकारी को वह विकल्प होगा कि वह किसी बंधपत्र को जिसे विहृत या विहृत किया गया है, ऐसे बंधपत्र के रूप में माने जाने वाले विनियम 11 के अधीन दूसरी प्रति के प्रोत्तरण या विनियम 17 के अधीन माल नवीकरण की अपेक्षा करता है।

## 15. बंधपत्र के रूप में किसी बंधपत्र को नवीकृत किए जाने की आवश्यकता कब ही सकती है :

- (1) बंधपत्र के रूप में बंधपत्र के किसी धारक से पुरोधरण कार्यालय द्वारा यह अपेक्षा की जा सकती कि वह उसे निम्नलिखित व्यापारों में से किसी वश में नवीकरण के लिए प्राप्त कर ले, अर्थात् :
  - (क) यदि बंधपत्र के पीछे भाग पर एक और पृष्ठांक के लिए या पर्याप्त जगह है अथवा यदि बंधपत्र पर विषयात्मक पृष्ठांक वृद्धिकरणों से भागे कोई सब लिखा जाता है;
  - (ख) यदि पुरोधरण कार्यालय की राय में बंधपत्र कठा है या किसी भी रूप में मुकासनग्रस्त है या उस पर अनुत्त लिखा गया या अनुपृक्षत है;
  - (ग) यदि बंधपत्र के पृष्ठ भाग पर पृष्ठांकम् स्टॉट और सुनिश्च नहीं हैं या उससे व्यापकिति पाने वाले का माय या पाने वालों का पता नहीं छलता है या पृष्ठांकन के किसी बदल कोष्टक से भिन्न स्थान पर पृष्ठांकन किया जाता है;
  - (घ) यदि बंधपत्र पर व्याप्र वश वर्ष या उससे अधिक समय से प्राप्त हित पड़ा हूपा है;
  - (ङ) यदि बंधपत्र के पृष्ठ भाग पर व्याज के बंद कोष्टक पूरी तरह भर चुके हैं या यदि बंधपत्र के पृष्ठ भाग पर जाली सुनिश्च बंद कोष्टक उन घट्ट बर्ती के जिनके लिए व्याप्र उस तारीख को देख हो जाए है जब बंधपत्र व्याज निकालने के लिए प्रस्तुत किया जाता है, अनुकृप नहीं है;

- (ज) यदि बंधपत्र व्याज के संवाय के लिए तीन बार मूलांकित किए जाने पर पुनर्मुखांकन के लिए प्रस्तुत किया जाता है; और
- (झ) यदि पुरोधरण कार्यालय की राय में, व्याज के संवाय के लिए बंधपत्र प्रस्तुत करने वाले अधिकारी हक्क अधिकारित है या दूसी तरह वाचित नहीं कुप्रा है।

(2) जब बंधपत्र के नवीकरण की अपेक्षा उपर्याप्ति (i) के प्रतीत की यई है तब पर और व्याज के संवाय से तब तक इकार किया जाएगा जब तक वह नवीकरण के लिए प्राप्त नहीं हो जाता है बास्तव में नवीकृत नहीं कर दिया जाता है।

## 16. वह व्यक्ति जिसके किसी मूल एकमाल धारक के बंधपत्र पर हक्क को मान्यता दी जा सकती :

(1) किसी बंधपत्र के किसी मूल एकमाल धारक के (जाहे चह युसलमान, पारमी ही या अन्य हो) निष्पादक या प्रशासक या किसी बंधपत्र की बाबत भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1925 (1925 का अधिनियम सं. 39) के भाग 10 के अधीन जारी किए गए किसी उत्तराधिकार प्रमाणपत्र के धारक केवल वही व्यक्ति होंगे जिन्हें पुरोधरण कार्यालय द्वारा (विहृत अधिकारी के किन्हीं साधारण या विशेष अनुदेशों के अधीन रहते हुए) बंधपत्र पर हक्क होने के संबंध में मान्यता प्राप्त की जा सकती।

(2) भारतीय संविधान अधिनियम, 1872 (1872 का अधिनियम सं. 9) की धारा 45 में किसी बात के हाते हुए भी, यदि कोई बंधपत्र दी या अधिक धारकों को पुरोधात् विक्रय किया जाता है या संदेश हो जाता है तो उत्तराधीनी वह व्यक्ति होगा और अंतिम उत्तराधीनी की मूल्य ही जाने पर उसके निष्पादक, प्रशासक या ऐसा कोई अधिकारी जो ऐसे बंधपत्र के संबंध में उत्तराधिकार प्रमाणपत्र का धारक है, केवल वह व्यक्ति जिसे पुरोधरण कार्यालय द्वारा (विहृत अधिकारी के किन्हीं साधारण या विशेष अनुदेशों के अधीन रहते हुए) बंधपत्र पर हक्क होने के संबंध में मान्यता प्राप्त की जा सकती।

(3) पुरोधरण कार्यालय ऐसे निष्पादकों या प्रशासकों को मान्यता देने के लिए तब तक वाप्त नहीं होगा जब तक कि उन्होंने, यास्तिष्ठि भारत में पुरोधरण कार्यालय के स्थान पर अधिकारित रखने वाले किसी समाज व्यायालय का कार्यालय से ब्रोडबट या प्रशासन पत्र या अन्य निधिक प्रभावदान प्राप्त न कर लिया हो: परन्तु ऐसी किसी भी वश में जहां विहृत अधिकारी के, भरने पूर्ण विकानुसार उचित समझे, यिन् यह विशिष्ट व्यापारों होगा कि वह अतिपूर्ति या अन्यथा के संबंध में ऐसे निष्पादकों पर चैसे, वह उचित समझे, प्रोब्रेट, प्रशासन पत्र या अन्य विशिक प्रभावदान प्रस्तुत करते से मान्यदृष्टि प्रदान करे।

## 17. नवीकरण, अधिक के लिए रक्षादः :

(1) विहृत अधिकारी के किन्हीं साक्षरण या विशेष अनुदेशों के रहते हुए पुरोधरण कार्यालय, अपने आवेदन से, धारक के आवेदन पर,—

(क) उसके द्वारा बंधपत्र या पत्रों के रूप में बंधपत्र या बंधपत्रों का परिदान करने पर और उसके द्वारा के व्याय के संबंध में पुरोधरण कार्यालय का समाधान कर देने पर, बंधपत्र या पत्रों को नवीकृत या उपर्याप्ति या समेकित कर सकेगा: परन्तु यह तब जब कि पत्र या व्याप्रिति प्रकृत 6, प्रकृत 7 या प्रकृत 8 में प्राप्त किया गया हो या किए गए हों; या

(ख) बंधपत्र या पत्रों को स्टाफ प्रमाणपत्र या स्टाफ प्रमाणपत्रों में संवर्तित कर सकेगा: परन्तु यह तब जब कि पत्र या पत्रों को निम्नलिखित रूप में पृष्ठांकित किया गया है:

“राष्ट्रीय आवास एक की संवाय करे” या

(ग) स्टाफ प्रमाणपत्र या स्टाफ प्रमाणपत्रों का नवीकरण उपर्याप्ति या समेकित कर सकेगा: परन्तु यह तब जब कि स्टाफ प्रमाणपत्रों की, व्याप्रिति, प्रकृत 6, 10 या 11 में प्राप्त किया गया है; या

(५) स्टाक प्रमाणपत्र या स्टाक प्रमाणपत्रों की बचनपत्र या बचनपत्रों में संपरिवर्तित कर सकेगा: परन्तु यह तब जबकि स्टाक प्रमाणपत्र या स्टाक प्रमाणपत्रों को प्रकृत 12 में प्राप्त किया गया है; या

(६) एक थंडला के बंधपत्रों की किसी अन्य थंडला में संपरिवर्तित कर सकेगा। परन्तु यह तब जब कि—

(i) उस्तर थंडला संपरिवर्तन अनुमति हो, और

(ii) ऐसे संपरिवर्तन को आमिन करने वाली घटों का पालन किया जाता ही।

(2) पुरोधरण कायानिय, विहित अधिकारी के आवेदनों के प्रधीन प्रावेदक से यह प्रधेश कर सकेगा कि वह उपचिनियम (i) के प्रधीन किसी बंधपत्र के नमोकरण, उपचिनियम या समेकन के लिए उसके द्वारा अनुमतिन एक प्रतिशृंखला अधिक प्राप्तिशृंखलों के साथ रूप 13 में अतिरूप पत्र निष्पाठन करे।

18. हक के बारे में विवाद की दण में बंधपत्र का नदीकरण:

जहाँ ऐसे किसी बंधपत्र के जिसकी आवश्यकता करने के लिए प्रावेदन किया गया है, हक के बारे में कोई विवाद है वहाँ विहित अधिकारी,

(क) जहाँ विवाद के किसी पक्षकार ने सक्रम प्रधिकारिता पाले किसी आवश्यकता से अंतिम विनियम व्याप्त कर लिया है जिसमें उसे ऐसे बंधपत्र का हकदार घोषित किया गया है, वहाँ ऐसे पक्षकार के पक्ष में नमोकरण बंधपत्र आगे कर सकेगा; या

(ल) जब तक ऐसा विनियम व्याप्त नहीं कर लिया जाता है, बंधपत्र का नदीकरण करने से हकदार कर सकेगा।

#### स्पष्टीकरण :

इस विनियम के प्रयोगनां के लिए “अंतिम विनियम” पत्र से ऐसा विनियम अभिप्रेत है जो अनीलनिय है या ऐसा विनियम अभिप्रेत है जो अपीलनिय है किन्तु जिसकी विस्तृत विविध द्वारा अनुमान परिसर्वमा अधिक की भीतर कोई प्रयोग कारेल नहीं की गई है।

19. नमोकृत बंधपत्र आदि की वाक्यता वाचिक्य :

जब किसी व्यक्ति के पक्ष में विनियम 11 के प्रधीन बंधपत्र की दूसरी प्रति पुरोधृत की गई या विनियम 17 के प्रधीन एक वर्वोकृत बंधपत्र पुरोधृत किया गया है या उपचिनियम या समेकन पर एक नया बंधपत्र पुरोधृत किया गया है तब इस प्रकार पुरोधृत बंधपत्र के बारे में यह समझा जाए कि राष्ट्रीय आवास बैंक और ऐसे व्यक्ति तथा उसके पक्षकार उसके माध्यम से हक प्राप्त करने वाले मर्म व्यक्तियों के बीच एक नई संबंध का गठन हुआ है।

20. उन्मोक्ष :

राष्ट्रीय आवास बैंक को, परियोगता पर संरक्ष बंधपत्र या बंधपत्रों की वाक्यता या जिनके बदले में बंधपत्र की दूसरी प्रति पुरोधृत की गई है या नमोकृत उपचिनियम या समेकित बंधपत्र पुरोधृत किया गया है या विवाद गए हैं :—

(क) संदाय की वजा में, उस तारीख से जिसकी संदाय देप या, चार वर्ष बीत जाने के पश्चात्

(क) बंधपत्र की दूसरी प्रति की वजा में, ऐसी दूसरी के बिसमै बंधपत्र का पहली बार बर्णन किया गया है, विनियम 13 के प्रधीन\*\*\* प्रकाशन की तारीख से या मूल बंधपत्र पर व्याज संदाय की तारीख से, इनमें से जो भी तारीख पक्षात्मकी ही, चार वर्ष बीत जाने के पश्चात्

(ग) नवीकृत बंधपत्र या उपचिनियम या समेकन पर पुरोधृत किसी नए बंधपत्र की वजा में, उसके पुरोधरण की तारीख से चार वर्ष बीत जाने के पश्चात्,

सभी वापिसी से उन्मोक्षित कर दिया जाएगा।

#### 21. व्याज की वाक्यता उन्मोक्ष :

बंधपत्र के निवापनों में अभिव्यक्त रूप से जैसा आवश्यक उपचिनियत है उसके सिवाय, कोई व्यक्ति किसी ऐसी अवधि की वाक्यता इन पूर्वतम तारीखों के पश्चात् जिसको ऐसे बंधपत्र पर देय रकम के संदाय के लिए मांग की जा सकती थी, बीत गई है, किसी ऐसे बंधपत्र पर इस संदाय करने का हकदार नहीं होगा।

#### 22. किसी बंधपत्र का उन्मोक्ष :

(क) जब बचनपत्र या स्टाक प्रमाणपत्र या रूप में घारित कोई बंधपत्र मूल धन संदाय के नियंत्रण द्वारा प्रकृत 14 में सम्यकतः हस्ताक्षरित एक रकम पुरोधरण कायालिय की दो जाएगी।

(ल) जहाँ वाते में प्रधिकृत के सप में कोई बंधपत्र मूल धन द्वि संदाय के लिए दोष्य ही जाता है वहाँ भारक द्वारा प्रकृत 14 में सम्यकतः हस्ताक्षरित एक रकम पुरोधरण कायालिय की दो जाएगी।

#### अनुसूची

प्रह्ल 1

[विनियम 3 (3) देखिए]

अन्तरण का प्रक्रम

मैथ्रम—  
इसके द्वारा—  
प्रतिशत  
राष्ट्रीय आवास बैंक बंधपत्र, जो—  
का स्टाक प्रमाणपत्र/उसका एक भाग है,  
जैसा कि इस लिखा के मध्य भाग पर विविध है, और उसके साथ उस पर प्रोटोकूल व्याज—  
जो उसकी स्टाक में अपना हित या विषय—  
उसके निष्पादकों, प्रणालीयों या समन्वेताओं को समर्वेश्वर और अंतरित करता है/करते हैं  
और मैथ्रम—  
उस सामाजिक अंतरित उप-  
र्युक्त स्टाक को जितना मुझे हमें अनुशिष्ट किया गया है, विविध रूप से स्वीकार करता है/करते हैं।

\*मैं/हम@ यह अनुरोध करता हूँ/करते हैं कि उसेहमें अंतरित स्टाक के धारक/धारकों के रूप में मैं/हमें@ रजिस्ट्रीकृत किए जाने पर उपर्युक्त स्टाक प्रमाणपत्र उस सीमा तक जितना वह मसे/हमें अंतरित किया गया है, मेरेहमारे नाम पर नवीकृत किया जाए। संपरिवर्द्धित किया जा ए।@

\*\*मैं/हम@ यह अनुरोध करता हूँ/करते हैं कि उपर्युक्त अंतरिति (अंतरितियों)@ केइसके द्वारा उसेहन्हें@ अंतरित स्टाक के धारक (धारकों)@ के रूप में रजिस्ट्रीकृत किए जाने पर, उपर्युक्त स्टाक प्रमाणपत्र उस सीमा तक जितना वह उसेहन्हें@ अंतरित किया गया है, मेरेहमारे@ नाम पर नवीकृत किया जाए।

इसके संक्षेपत्रक प्रमाणपत्र अंतरक ने (रोल-को—\*की उपस्थिति हस्ताक्षर किए।

अपर नामित अंतरक ने

\*की अंतरक

उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

पता—

अपर नामित अंतरिति ने\*

की अंतरिति में हस्ताक्षर किए।

उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

(अंतरिति)

(रोल) जो विकल्प लागू न हो उसे काट दें।

\*\*इस पैरा का उपयोग सभी किया जाए जब स्टाक प्रमाणपत्र का कोई एक भाग अंतरित होता है।

\*मर्झी द्वारा उपर्युक्त का और पता।

प्रकल्प 2

[विनियम 3 (4) (ग) देखिए]

वचनपत्र 1: रूप में बंधपत्र का गार्ड्रीय आकास बैंक के खाते वो एक प्रविष्टि में सारिशक्तीने के लिए प्रध्यापिता।

तारीख— 19-

मेयर में,

प्रबंधक

बंधपत्र अनु नाम

गार्ड्रीय आकास बैंक

मम्बई।

प्रिय महोत्तम,

मर्झी— प्रदिवन गार्ड्रीय आकास बैंक  
बंधपत्र— (धंस्ताक)।

हम यह घोषणा करते हैं कि— 1. दो लाल अंचित मूल्य के वचनपत्र में पुरोवृत्त गार्ड्रीय आकास बैंक बंधपत्र जिसकी सूची इसमें पूछे दां गई, हमारी संपत्ति हैं और यह अनुरोध करते हैं कि हमें उसेहन्हें गार्ड्रीय आकास बैंक द्वारा रखे जाने वाले खाते में एक

प्रविष्टि के रूप में प्राप्त नाम में घासित करने के लिए अनुकूल किया जाए। इस प्रयोजन के लिए हम राष्ट्रीय आकास बैंक के पश्च में सम्बन्धित पूँछाकिन सुनिश्चित, बंधपत्र लिखें इसके साथ प्रध्यापित करते हैं। उस व्यक्तियों (उन व्यक्तियों) का (के) जिसेहन्हें खाते के प्रबन्धन के लिए प्राधिकृत किया गया है, नाम, पदाभिधान और ननूना हस्ताक्षर पीछे की तरफ दिए गए विवरण के अनुसार हैं।

इस संबंध में, हम आपके पश्च में सम्बन्धित स्वाधित और आपके प्राप्त होने वाले अनुरोध के लिए इसके लिए निष्पत्रित अतिपूर्ति विवेद इससे संलग्न कर रहे हैं।

आपसे अनुरोध है कि कृपया सम्पर्कमन्त्री में गार्ड्रीय आकास बैंक के खाते में एक प्रविष्टि के रूप में बंधपत्र भारण करने का प्रमाणपत्र प्राप्त होनारी अनि का कालिक विवरण ऊपर विए गए पते पर हमें भेज दें।

इस वीथ कृपया इसकी पावती भेज दें।

भवतीय,

रजिस्ट्रीकृत धारक (धारकों) उसके सम्बन्धित प्राधिकृत

प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

रजिस्ट्रीकृत धारक (धारकों) का (के) नाम—

इससे संलग्न बंधपत्र लिखों की सूची

बंधनपत्र का अंकित मूल्यों में, वर्णन निष्पत्रित है—

1. नाम: 1. का बंधपत्र लिख पत्र सं— (— शुल्कमा)

2. नाम: 2. का बंधपत्र लिख पत्र सं— (— शुल्कमा)

3. नाम: 3. का बंधपत्र लिख पत्र सं— (— शुल्कमा)

बंधपत्र लिखों का सकल अंकित मूल्य— 1. रुपये। हस्ताक्षर— एकल संयुक्त/प्रत्यग भाषण या उच्चरजीवी

नाम : 1—

पदनाम

2. — पदनाम

पता: —

टेलीफोन: — टेलेफोन

अनुमतिक्रमक (i) — दो, के सकल मूल्य की बंधपत्र लिखें

(ii) अतिपूर्ति विवेद।

## प्रह्ल 3

## [विनियम 3(4) (क) देखिए]

राष्ट्रीय आवास बैंक के खाते में प्रविठि के रूप में धारित बंधपत्रों के बबने में बंधपत्र स्थिरों के पुरोधारण के लिए अधिकारी।

मेवा में,

प्रबंधक  
बंधपत्र प्रनुभाग,  
राष्ट्रीय आवास बैंक  
मृमत्ति।

प्रिय महोदय,

मंदभै:— प्रतिशत राष्ट्रीय आवास बैंक बंधपत्र  
(— शुल्काना)

इस राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा रखे गए खाते में एक प्रविठि के रूप में हमारे द्वारा धारित बंधपत्रों की बाबत राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा पुरोधृत धूति प्रमाणपत्र इसके साथ अधिकारी करते हैं।

हमारा अनुरोध है कि कृपया, इस संज्ञय में बंधपत्र की शेष रकम की बाबत जो राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा रखे गए खाते में एक प्रविठि के रूप में धारित बनी हुई है, नए धूति प्रमाणपत्र के साथ हमारे बंधपत्र स्थिर ऊर्ध्वानि द्वारा पर रजिस्ट्री डाक से हमें भेज दिए जाएं।

इस बीच कृपया पावती भेजें।

भवदीय,

रजिस्ट्रीकृत धारक (धारकों) या उसके सम्यक प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर—  
रजिस्ट्रीकृत धारक (१) का (के) नाम—

अंपेक्षित बचतपत्र का अधीक्षा

1. धूति प्रमाणपत्र सं. — तारीख — रु. (— शुल्काना)

2. धूति प्रमाणपत्र मं. — तारीख — रु. (— शुल्काना)

3. धूति प्रगणणपत्र सं. — तारीख — रु.  
बंधपत्रों का सकल अंकित मूल्य — रु.

इनमें से कृपया नीचे अग्रिम अंकित मूल्यों में बंधपत्र स्थिरों के पुरोधारण की ध्यानपात्र करें:

अंकित मूल्य	संख्या	सकल अंकित मूल्य
(1) 1,000 रु. प्रत्येक—	—	रु.
(2) 10,000 रु. प्रत्येक—	—	रु.

रु. के सकल मूल्य की युल्लंघन हित।

हमारा अनुरोध है कि बंधपत्रों परी शेष रकम राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा रखे गये खाते में एक प्रविठि के रूप में धारित रखी जाए।

## प्रह्ल 4

## [विनियम 3(4) (छ) देखिए]

राष्ट्रीय आवास बैंक के खाते में एक प्रविठि के रूप में बंधपत्र के प्रतिरोध का प्रलम्ब

हम, —————— जो राष्ट्रीय आवास बैंक के खाते में एक प्रविठि के रूप में बंधपत्रों के धारक हैं —————— को प्रीर उसके पाथ में —————— रु. तक की अपनी धूति जो हमारे बंधपत्र का संपूर्ण भाग/वर्षा है और उसके साथ उस पर प्रोब्लूम तक का व्याज समन्वेषित और प्रतिरोध करते हैं।

हम —————— उमर्जन बंधपत्र के अपने नाम पर प्रतिरोध को निर्वाचित रूप से स्वीकार करते हैं।

आज तारीख —————— को हमने इस पर हस्ताक्षर कर दिए और नामित —————— (विदेशी) ने —————— की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

उपर नामित —————— (विदेशी) ने —————— की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

टिप्पणी — जिन राज्य में यह निपादित किया जाता है, वहाँ के स्थानीय स्टाम्प अधिनियम द्वारा यथासंशोधित भारतीय स्टाम्प अधिनियम, 1899 मी धारा 62(ग) के अन्तर्गत स्टंपित किया जाए।

5

## [विनियम 5(2) (घ) (iii) देखिए]

स्टाम्प प्रमाणान्व के रूप में पुरोधृत बंधपत्र के नवीकरण के लिए रसीद का प्रह्ल

— के पास में —————— रु. —————— प्रतिशत राष्ट्रीय आवास बैंक बंधपत्र, —————— का नवीकृत स्टाम्प प्रमाणान्व और व्याज' जो राष्ट्रीय आवास बैंक, —————— द्वारा संरेख्य है, इसके छवले में प्राप्त किया। —————— के राष्ट्रीकृत धारक के (राजस्ट्रीकृत धारक का नाम) —————— के सम्बन्ध में प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर ——————

## प्रह्ल 6

## [विनियम (7)(1)(क) देखिए]

बचतपत्र के रूप में बंधपत्र के नवीकरण के लिए पूँजीकरण

का प्रह्ल

को संवेद्य नवीकृत बचतपत्र

(धारक का नाम)

और व्याज जो राष्ट्रीय आवास बैंक, —————— द्वारा मंदेय है, इसके छवले में प्राप्त किया।

धारक के —————— के सम्बन्ध में प्राधिकृत (धारक का नाम)

प्रतिनिधि के हस्ताक्षर ——————

## प्रलेप 7

## [विनियम 17(1)(क) देखिए]

बचनपत्र के रूप में बंधपत्र के उप-विभाजन के लिए पृष्ठांकन का प्रलेप को संदेय कराया गया।

(धारक का नाम)

के बचनपत्र और व्याज जो राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा संदेय हैं, इसके बदले में प्राप्त किया गया।

(धारक का नाम)

सम्बन्धित प्रतिनिधि के हस्ताक्षर।

## प्रलेप 8

## [विनियम 17 (1) (क) देखिए]

बचनपत्र के हृष में बंधपत्रों के समेकन के लिए पृष्ठांकन का प्रलेप को संदेय कराया गया।

(धारक का नाम)

के बचनपत्र को जो बचनपत्र संगठन के गाय समेकित (इसके साथ समेकित किए जाने के लिए अंडित अंथ पत्र (पत्रों) का (के) संबंधित और रकम (रकमों) उनके पुरोधरण को विनिरिट करते हैं, वर्णित करें) और व्याज जो राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा संदेय है, इसके बदले में प्राप्त किया।

धारक के

(धारक का नाम)

सम्बन्धित प्रतिनिधि

के हस्ताक्षर।

## प्रलेप 9

## [विनियम (17)(1)(ग) देखिए]

स्टाक प्रमाणपत्र के नक्कारण के लिए पृष्ठांकन का प्रलेप प्रतिशत राष्ट्रीय आवास बैंक बंधपत्र का नवीकृत (वर्ष)

स्टाक प्रमाणपत्र जो के में है और व्याज जो राष्ट्रीय आवास बैंक, के द्वारा संदेय है, इसके बदले में प्राप्त किया।"

(रजिस्ट्रीकृत धारक को के सम्बन्धित प्रतिनिधि का नाम)

प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर।

## प्रलेप 10

## [विनियम 17(1)(ग) देखिए]

स्टाक प्रमाणपत्र के उप-विभाजन के लिए पृष्ठांकन का प्रलेप उप-विभाजन राष्ट्रीय आवास बैंक बंधपत्र के

के इस स्टाक प्रमाणपत्र के बदले में स्टाक प्रमाणपत्र और व्याज जो राष्ट्रीय आवास बैंक

(स्थान)

संदेय है, प्राप्त किया।

रजिस्ट्रीकृत धारक के

(रजिस्ट्रीकृत धारक का नाम)

के द्वारा उप-विभाजन के हस्ताक्षर।

## प्रलेप 11

## [विनियम 17(1)(ग) देखिए]

स्टाक प्रमाणपत्र के समेकन के लिए पृष्ठांकन का प्रलेप प्रतिशत राष्ट्रीय आवास बैंक बंधपत्र के नवाया गया। राष्ट्रीय आवास बैंक बंधपत्र के बदले में प्रतिशत राष्ट्रीय आवास बैंक का स्टाक प्रमाणपत्र और व्याज जो राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा संदेय है, प्राप्त किया।

रजिस्ट्रीकृत धारक के

(रजिस्ट्रीकृत धारक का नाम)

सम्बन्धित प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर।

## प्रलेप 12

## [विनियम 17(1)(च) देखिए]

स्टाक प्रमाणपत्रों को बचनपत्रों में संपर्कर्तन के लिए पृष्ठांकन का प्रलेप इस स्टाक प्रमाणपत्र में प्रतिशत राष्ट्रीय आवास बैंक, प्रतेक के बचनपत्र (उसके साथ उसके रकम के लिए नया स्टाक प्रमाणपत्र) और व्याज जो राष्ट्रीय आवास बैंक, द्वारा संदेय है, प्राप्त किया।

रजिस्ट्रीकृत धारक के

(रजिस्ट्रीकृत धारक का नाम)

के सम्बन्धित प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर।

## प्रलेप 13

## [विनियम 17(2) देखिए]

इस विलेख द्वारा यह सबको जात हो कि हम

(मूल अर्णी

का नाम)

पुत्र है का निवासी है तथा शो का (प्रतिशुभ सं. 1)

पुत्र है और जो निवासी है तथा जो (प्रतिशुभ सं. 2)

पुत्र है और का निवासी है, राष्ट्रीय आवास बैंक विनियम 1987 के अधीन यथास्थापित राष्ट्रीय आवास बैंक प्रति जिसे इसमें इनके पाण्डात् “उक्त राष्ट्रीय आवास बैंक” कहा गया है, की रकम का उक्त राष्ट्रीय आवास बैंक, उसके अट्टनियों, उत्तराधिकारियों और समनूदेशितियों को संदर्भ करते के लिए इसके द्वारा स्वयं को और हम में से प्रतेक और अपने बानियों, नियायिकों, प्रणालिकों और प्रतिनिधियों में दूर एक को संयुक्त को और अलग-भलग आवास बैंक में है।

और मैं/हम में से प्रतेक उक्त

(मूल अर्णी का नाम)

और उक्त राष्ट्रीय आवास बैंक के गाय

(प्रतिशुभ के प्रतिशुभों के साथ यह प्रतिविदा करता है/करते हैं कि वह इस वाइपना वाइपमें नीचे लिखी

[मान II]—खण्ड 3 (ii)]

शर्त की विधय दस्तु से संसन्देश कोई बाब मुम्बई उच्च न्यायालय के किसी प्रधीनस्थ न्यायालय में लाया जाता है सो उसे, उक्त राष्ट्रीय आवास बैंक के आग्रह पर, जो भी ऐसे बाब का पक्षकार हो, उक्त उच्च न्यायालय द्वारा मुम्बई में इसी इमारातण पूल मिलिय अधिकारिता में ले जाया जा सकेगा और उनके द्वारा विचारित और अवधारित किया जा सकेगा।

उक्त ने उक्त राष्ट्रीय  
(मूल ऋणी का नाम)

आवास बैंक द्वारा पुरोधृत और इसकी अनुसूची में वर्णित बंधपत्रों के नवीकरण/समेकन/उत्तिष्ठान के लिए, उक्त राष्ट्रीय आवास बैंक को आवेदन किया है।

और उक्त राष्ट्रीय आवास बैंक ने उक्त  
(मूल ऋणी का नाम)

और दो अन्य और पर्याप्त प्रतिभूतों के, इसमें निचे लिखित शर्तों के अधीन रहते हुए, ऊपर लिखित बंधपत्र लिखने और लिपाधित करने पर समर्पित ही है और वह उक्त आवेदन को स्वीकार करने के लिए सहमत हो गया है।

और उपर्युक्त आवद  
(प्रतिभूत/प्रतिभूतों के नाम)

उक्त के अनुरोध पर उक्त  
(मूल ऋणी का नाम)

के लिए प्रतिभूत जनने के लिए और उक्त  
(मूल ऋणी का नाम)

के साथ ऊपर लिखित बंधपत्र लिपाधित  
(मूल ऋणी का नाम)

करने के लिए सहमत हो गया है/गए हैं। ऊपर लिखित बंधपत्र की शर्त  
यह है कि यदि उपर्युक्त आवद  
(मूल ऋणी का नाम)

या उसमें से प्रत्येक या उसके/उनके  
और  
(प्रतिभूत या प्रतिभूतों का नाम)

वारिस, निपाइक, प्रशासक या प्रतिनिधि या कोई या उसमें से कोई इसके प्रशासन समय पर और सभी समय पर उक्त राष्ट्रीय आवास बैंक भी इसकी अनुसूची में वर्णित उक्त राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा पुरोधृत बंधपत्रों और उस पर व्याज के हकदार होने का बाबा करने वाले व्यक्तियों के और उक्त बंधपत्र या उसके नवीकरण या उस व्याज के संशय भी जाबन अर्थ व्यक्तियों के, जो भी हों, दावों और भाँतियों से या उसके विवर और ऐसे सभी नुकसानियों/हानियों, खर्चों, प्रशारों और अर्थों से या उसके विवर जो उक्त आवास बैंक किसी ऐसे दावे या भाँति के लिए या के परिणामस्वरूप या यथापूर्वक नवीकृत बंधपत्र (i) के पुरोधरण या उक्त बंधपत्र (i) या नवीकृत बंधपत्रों पर बंधपत्र (i) के संशय के कारण उठाए, उपगत करे, या पायी हो, उक्त राष्ट्रीय आवास बैंक को प्रभावी हप्ते से बचाएंगे, रक्खा करेंगे, अपहारित होंगे और अपहूँसित होंगे जो उपर्युक्त बंधपत्र शून्य हो जाएगा। अन्यथा यह पूर्णतः प्रभुत और बलशील होगा।

उक्त  
(मूल ऋणी का नाम)  
की उपर्युक्ति में आज तारीख  
को हस्ताक्षर किए और परिवान किया।

इसमें निलिट अनुसूची

बंधपत्र का स्वरूप संशोधक  
और वर्णन

पुरोधरण की  
नारीख

रक्म

प्र० 14

[विनियम 22(ब) देखिए]

राष्ट्रीय आवास बैंक के खाते में प्रविष्टि के रूप में धारित बंधपत्रों के लिए उपर्युक्त का प्रक्रम

सेवा भंग

प्रबंधक,  
बंधपत्र अनुभाग,  
राष्ट्रीय आवास बैंक,  
मुम्बई।

प्रिय महांवय,

संदर्भ: प्रतिशत, राष्ट्रीय आवास बैंक  
बंधपत्र (शृंखला)

राष्ट्रीय आवास बैंक की बहियों में  
(बंधपत्र धारक) के जमा खाते में एक प्रविष्टि के रूप में धारित  
रु. (रु.)  
के अभिहित अंकित भूल के अंधित अंकित भूल (रु.) पर परिषम्बता की  
तारीख को प्रादूर्भूत व्याज सहित मूल रकम प्राप्त की। प्राप्तिष्ठित  
किया जाता है कि बंधपत्र (रु.) की अभिहित रकम और परिषम्बता  
की तारीख को प्रादूर्भूत व्याज मेरी/हमारी बहियों के अनुकूल है।

भवदीय,

रजिस्ट्रीकृत धारक (i) के उसके सम्बन्धित प्राधिकृत

प्रतिनिधि के हस्ताक्षर —

रजिस्ट्रीकृत धारक (i) का (के) नाम —

तारीख:

स्थान:

[फा. 7(12) 89-सी पा.]

के.एस. शास्त्री, प्रध्यक्ष,  
राष्ट्रीय आवास बैंक

## NATIONAL HOUSING BANK

### NOTIFICATION

New Delhi, 31st July 1980

(Incorporated under the National Housing Bank Act,  
1987)

(53 of 1987)

### NATIONAL HOUSING BANK (ISSUE AND MANAGEMENT OF BONDS) REGULATIONS 1989.

S.O. 600(E).—In exercise of the powers conferred by section 55 of the National Housing Bank Act, 1987 (53 of 1987), the National Housing Bank, with the previous approval of the Reserve Bank of India and in consultation with the Central Government, hereby makes the following regulations, namely :—

#### 1. Short title and application :

(1) These regulations may be called the NATIONAL HOUSING BANK (Issue and Management of Bonds) Regulations, 1989.

## (2) They shall apply to :

- (a) bonds series No. 1 issued and sold by the National Housing Bank and such other series as may be issued by the National Housing Bank till coming into force of these regulations.
- (b) the bonds issued and sold by the National Housing Bank from the date of coming into force of these regulations.

## 2. Definitions :

In these regulations unless there is anything repugnant in the subject or context :—

(a) "The Act" means the NATIONAL HOUSING BANK ACT, 1981 (25 of 1981);

"Bonds" means the bonds issued and sold by the National Housing Bank under clause (a) or sub section (1) of section 15 of the Act, whether before or after the coming into force of these regulations;

(c) "Defaced Bond" means a bond which has been made illegible and rendered unascertainable in material parts and the material parts of a bond are those where :—

- (i) the number, the issue to which it appertains and the face value of the bond, or payments of interest are recorded, or
- (ii) the endorsement or the name of the payee is written, or
- (iii) the renewal receipt or the memorandum of transfer is supplied;

(d) "Form" means a form as set out in the schedule to these regulations;

(e) "Lost Bond" means a bond which has actually been lost and shall not mean a bond which is in possession of some person adversely to the claimant;

(f) "Mutilated Bond" means a bond which has been destroyed, torn or damaged in material parts thereof;

(g) "Office of Issue" means the Office of the National Housing Bank on the books of which a bond is registered or may be registered;

(h) "Prescribed Officer" means such officers of National Housing Bank as may be authorised by the Board of Directors of the National Housing Bank for purposes of regulations 11, 12, 13, 14, 16, 17 and 18.

(i) "Stock Certificate" means a stock certificate issued under regulation 3.

## 3. Form of the Bond and the mode of transfer thereof etc.

(1) A Bond may be issued by the National Housing Bank in the form of :—

- (a) a promissory note payable to or to the order, of a certain person, or
- (b) a stock certificate for stock registered in the books of the National Housing Bank.

(2) (i) A Bond issued in the form of promissory note shall be transferable by endorsement and delivery like a promissory note payable to order.

(ii) No writing on a Bond issued in the form of a promissory note shall be valid for the purpose of negotiation if such writing purports to transfer only a part of the amount denominated by the Bond.

(3) A Bond issued in the form of stock certificate and registered in the books of the National Housing Bank shall transferable either wholly or in part by execution of an instrument of transfer in Form I. The transfer or in such a case shall be deemed to be the holder of the Bonds issued in the form of stock certificate to which the transfer relates until the name of the transferee is registered by the National Housing Bank.

(4) (a) Notwithstanding anything to the contrary in sub-regulation (1) hereof contained the National Housing Bank may, at the request of the person entitled to the Bonds, issue Bonds in the form of an entry in an account to be maintained by the National Housing Bank in the name of the person entitled to the Bonds.

(b) The Bonds may be so issued in the form of an entry in the books of accounts of the National Housing Bank either initially at the time of subscription to the Bonds or subsequently by conversion of the Bonds issued either in the form of a promissory note or stock certificate.

(c) If a Bond has already been issued in the form of promissory note, the Bond holder desirous of holding it in the form of an entry in an account with the National Housing Bank shall make requisition in Form II and surrender the Bond duly endorsed in favour of the National Housing Bank for the Bond being held in the form of an entry in an account in the books of the National Housing Bank.

(d) If the Bond has been issued in the form of stock certificate, the holder shall transfer the Bond in favour of the National Housing Bank with a request that the Bond may be held in the form of an entry in an account to be maintained by the National Housing Bank in the name of the holder.

(e) A person holding Bonds in the form of an entry in an account maintained by the National Housing Bank may have the Bonds transferred or converted in the form of a promissory note or a stock certificate by making an application in Form III.

(f) No fee is chargeable for issuing Bonds in the form of an entry in the account of the books of the National Housing Bank or converting Bonds already issued either in the form of a promissory note or stock certificate in the form of an entry in the books of the National Housing Bank or vice versa.

(g) Bonds issued or held in the form of an entry in the books of the National Housing Bank shall be transferable by execution of an instrument of transfer in Form IV. The transferor in such cases shall be deemed to be the holder of the Bonds to which the transfer relates till such time the name of the transferee is entered in the books of the National Housing Bank.

(5) (i) A Bond shall be issued over the signature of the Chairman of the National Housing Bank which may be printed, engraved or lithographed or impressed by such other mechanical process as the National Housing Bank may direct.

(ii) A signature so printed, engraved, lithographed or otherwise impressed shall be as valid as if it had been inscribed in the proper handwriting of the signatory himself.

(6) No endorsement of a Bond in the form of a promissory note or no instrument of transfer in the case of a Bond in the form of stock certificate shall be valid unless made by the signature of the holder or his duly constituted attorney or representative inscribed in the case of a Bond in the form of a promissory note on the back of the Bond itself and in the case of a Stock Certificate on the instrument of transfer.

#### 4. Trust not recognised :

- (i) The National Housing Bank shall not be bound or compelled to recognise in any way, even when having notice thereof, any trust or any right in respect of a bond other than an absolute right thereto in the holder.
- (ii) Without prejudice to the provisions of sub-regulation (i), the National Housing Bank may as an act of grace and without liability to the National Housing Bank record in its books such directions by the holder Bond issued in the form of stock certificate for the payment of interest on or of the maturity value of or the transfer of or such matters relating to the stock certificate as the National Housing Bank thinks fit.

#### 5. Provisions for holding Bonds issued in the form of the stock certificate by trustees and office holders.

(1) A Bond in the form of stock certificate may be held by a holder of an office—

- (a) in his personal name, described in the books of the National Housing Bank and in the stock certificate, as a trustee, whether as a trustee, of the trust specified in his application or as a trustee without any such classification, or
- (b) by the name of his office.

(2) On an application made in writing to the National Housing Bank in the Form required by the national Housing Bank the person in whose

name a Bond stands and on surrender of the Bond the National Housing Bank may —

- (a) make an entry in its book describing him as a trustee of a specified trust or as a trust without specification of any trust and issue a stock certificate in his name described as trustee with or without the specification of the trust as the case may be, or
- (b) issue a stock certificate to him by the name of his office and make an entry in its books describing him as the holder of the stock by the name of his office, according to the applicant's request, provided —
  - (i) the request is in conformity with the provisions of sub-regulation (1) hereof,
  - (ii) the necessary evidence required by the national Housing bank in terms of sub-regulation (7) has been furnished; and
  - (iii) the Bond if it is in the form of promissory note has been endorsed in favour of the National Housing Bank and if in the form of stock certificate has been recipited by the registered holder in Form V.

(3) The stock certificate under sub-regulation (1) may be held by the holder of the office either alone or jointly with another person or persons or with a person or persons holding an office.

(4) When the stock is held by a person in the name of his office, any documents relating to the stock certificate concerned may be executed by the person for the time being holding the office by the name in which the stock certificate is held as if his personal name were so stated.

(5) Where any transfer-deed, power of attorney or other document purporting to be executed by a stock certificate holder described in the books of the National Housing Bank as a trustee or as a holder of an office is produced to the National Housing Bank, the National Housing Bank shall not be concerned to inquire whether the stock certificate holder is entitled under the terms of any trust or document or rules to give any such power or to execute such deed or other document, and may act on the transfer-deed, power of attorney or document in the same manner as though the executant is stock certificate holder is or is not described in the transfer-deed, power of attorney or document as a trustee or as a holder of an office and whether he does or does not purport to execute the transfer deed, power of attorney or document in his capacity as a trustee or as a holder of the office.

(6) Nothing in these regulations shall, as between any trustee or office holders, or as between any trustee or office holders, and the beneficiaries, under a trust or any document or rules, be deemed to authorise the trustees or office holders to act otherwise than in accordance with the rules of law applying to trust, the terms of the instrument constituting the trust, or the rules governing the association of which the stock certificate holder is a holder of an office and neither the National Housing Bank nor any person holding

or acquiring any interest in any stock certificate shall by reason only of any entry in any register maintained by the National Housing Bank nor any person holding or acquiring any interest in any stock certificate shall by reason only of any entry in any register maintained by the National Housing Bank in relation to any stock certificate or any stock certificate holder or of anything in any document relating to stock certificate be affected with notice of any trust or of the fiduciary character of any stock certificate holder or of any fiduciary obligation attaching to the holding of any stock certificate.

(7) Before acting on any application made, or on any document purporting to be executed, in pursuance of this regulation by a person as being the holder of any office, the National Housing Bank may require the production of evidence that such person is the holder for the time being of that office.

#### 6. Provision for holding of bonds issued in the form of promissory notes by trustor trustee(s).

(1) Without prejudice to the provisions of sub-regulation (i) of regulation 4, the National Housing Bank may, at the request of the applicant and without liability to the National Housing Bank issue a Bond in the form of promissory note in the name of a specified trust or trustee(s) of that trust, or, as the case may be, in the personal name of the applicant, describing him as a trustee, whether as a trustee of the trust specified in his application or as a trustee without such specifications.

(2) Where a Bond in the form of promissory note stands in the personal name of the holders, the National Housing Bank may, on an application made by him in the Form required by the National Housing Bank and on surrender of such Bond, issue a renewed Bond in the form of a promissory note in the manner laid down in sub-regulation (1) hereof :

Provided that,—

- (i) the necessary evidence required by the National Housing Bank in terms of sub-regulation (6) hereof has been furnished; and
- (ii) the Bond has been endorsed in favour of the National Housing Bank.

(3) The Bond under sub-regulation (1) hereof may be held by a trustee of any trust either alone or jointly with another person or persons as trustees of that trust.

(4) Where a Bond in the form of promissory note purports to have been endorsed by the Bond holder as a trustee, or where any power of attorney or other document purporting to be executed by the Bond holder is produced to the National Housing Bank, the National Housing Bank shall not be concerned to enquire whether the Bond holder is entitled under the terms of any trust or document or rules to make such endorsement or execute such power of attorney or other document, and may act on endorsement, power of attorney or document, in the same manner as though such endorser is a Bond holder and whether

the Bond holder is or is not described in the endorsement, power of attorney or document as a trustee, and whether he does or does not purport to make endorsement or execute the power of attorney or document in his capacity as a trustee.

(5) Nothing in these regulations shall, as between any trustees and the beneficiaries, under a trust or any document or rules, be deemed to authorise the trustees to act otherwise than in accordance with the rules of law applying to trust or the terms of the instrument constituting the trust.

(6) Before acting on any application made, in pursuance of this regulation, by a person as being the trustees of any trust, the National Housing Bank may require the production of evidence that such person is the trustee for the time being of that trust.

#### 7. Persons disqualified to be holders :

No minor and no person who has been found by a competent court to be of unsound mind shall be entitled to be a holder of Bonds.

#### 8. Payment of Interest :

(1) Interest on a bond in the form of a promissory note shall be paid by the office of issue or any other office of the National Housing Bank specified in the bond prospectus subject to compliance by the holder of the bond with such formalities as the National Housing Bank may require, and on presentation of the bond.

(2) Interest on a bond in the form of stock certificate shall be paid by warrants issued by the National Housing Bank and payable at the local office of the National Housing Bank or the Reserve Bank or the scheduled bank. The presentation of the stock certificate shall not be required at the time of payment of interest but the payee shall acknowledge receipt at the back of the warrant.

(3) Interest on a Bond held in the form of an entry in the books of the National Housing Bank shall be paid by the National Housing Bank by issue of warrants crossed account payee or in such other manner as may be agreed to by the National Housing Bank.

#### 9. Procedure where bond in the form of a promissory note is lost etc.

(1) Every application for the issue of a duplicate bond in place of a bond which is alleged to have been lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced, either wholly or in part shall be addressed to the office of issue, and shall contain the following particulars, namely :

- (a) Particulars of the bond according to the following form:-

Bond for Rs. .... No .....  
of the ..... per cent  
National Housing Bank Bonds ;

- (b) Last half-year for which interest has been paid ;
  - (c) The person to whom such interest was paid ;
  - (d) The person in whose name bond was issued (if known) ;
  - (e) The circumstances attending the loss, theft, destruction, mutilations or defacement ; and
  - (f) Whether the loss or theft was reported to the police.
- (2) Such application shall be accompanied by :
- (a) where the bond was lost in course of transmission by registered post, the Post Office registration receipt for the letter containing the bond ;
  - (b) a copy of the police report, if the loss or theft was reported to the police ;
  - (c) if the applicant is not the registered holder, an affidavit sworn before a magistrate testifying that the applicant was the last legal holder of the bond and all documentary evidence necessary to trace back the title to the registered holder ; and
  - (d) any portion or fragments which may remain of the lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced bond.
- (3) A copy of the application shall also be sent to the office of the National Housing Bank where interest is payable if such interest is not payable by the office of issue, provided that it shall not be necessary to send copies of enclosures accompanying the application.

#### 10. Notification in Gazette :—

The loss, theft, destruction, mutilation or defacement of a bond or portion of a bond in the form of a promissory note shall forthwith be notified by the applicant in three successive issues of the Gazette of India and of the local Gazette, if any, of the place where the loss, theft, destruction, mutilation or defacement occurred. Such notification shall be in the following form or as nearly in such form as circumstances permit :—

“Lost”, (“stolen, “Destroyed”, “mutilated” or “defaced” as the case may be).

The National Housing Bank Bond No. .... of the ..... per cent Bond for Rs. .... originally standing in the name of ..... and last endorsed to the proprietor, by whom it was never endorsed to any other person having been lost (stolen, destroyed, mutilated or defaced) notice is hereby given that payment of the above bond and the interest thereupon has been stopped at the office of issue, and that application is about to be made or has been made for the issue of a duplicate in

favour of the proprietor. The public are cautioned against purchasing or otherwise dealing with the above-mentioned bond.

Name of person notifying.  
Residence.

#### 11. Issue of duplicate bond and taking of indemnity:—

- (1) After the publication of the last notification prescribed in regulation 10, the prescribed officer shall, if he is informed of the loss, theft, destruction, mutilation or defacement of the bond and of the justice of the claim of the applicant, cause the particulars of the bond to be included in a list published under regulation 13 and shall order the office of issue :—
  - (a) If only a portion of the bond has been lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced, and if a portion thereof sufficient for its identification has been produced, to pay interest and to issue to the applicant, on execution of an indemnity bond such as is hereinafter mentioned a duplicate bond in place of that of which a portion has been so lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced either immediately after the publication of the list under regulation 13 or on the expiry of such period as the prescribed officer may consider necessary from the date of the publication of the said list ;
  - (b) if no portion of the bond so lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced, sufficient for its identification has been produced :—
    - (I) to pay to the applicant, two years after the publication of the said list, and on the execution of an indemnity bond in the manner hereinafter prescribed, the interest in respect of the bond so lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced till the expiry of the period of four years as next hereinafter provided ; and
    - (ii) to issue to the applicant a duplicate bond in place of the bond so lost, stolen, destroyed, mutilated, or defaced four years after the date of publication of the said list; provided that ;
      - (i) if the date on which the bond is due for repayment falls either than the date on which the said period of four years expires, the prescribed officer shall, within six weeks of the former date, invest the principal amount due on the bond in the Post Office Savings Bank, or if the applicant so desires, in current Bonds issued by the National Housing Bank maturing not earlier than the date on which the duplicate is due for issue and shall repay this amount, together with any interest which may have accrued thereon in such Bank, or in such Bonds in which the investment is made, to the applicant at the time when a duplicate bond would otherwise have been issued, and

- (ii) if any time before the issue of the duplicate bond the original bond is discovered or it appears to the office of issue for other reasons that the order should be rescinded, the matter shall be referred to the prescribed officer for further consideration and in the meantime all action on the order shall be suspended. An order passed under this sub-regulation shall on expiry of the period of four years referred to therein, become final unless it is in the meantime rescinded or otherwise modified.
- (2) The prescribed officer may, at any time prior to the issue of a duplicate bond, if he finds sufficient reasons, alter or cancel any order made by him under this regulation and may also direct that the interval before the issue of a duplicate bond shall be extended by such period not exceeding four years as he may think fit.
- (3) **Indemnities :**
- (i) (a) when executed under sub-regulation (1)-(b)(I) shall be for twice the amount of interest involved, that is to say, twice the amount of all back interest accrued due on the bond plus twice the amount of all interest to accrue due thereon during the period which will have to elapse before the issue of a duplicate bond can be made, and
- (b) in all other cases shall be for twice the face value of the bond plus twice the amount of interest calculated in accordance with clause (a).
- The prescribed officer may direct that such indemnity bond shall be executed by the applicant alone or by the applicant and one or two sureties approved by him as he may think fit.
- 12. Procedure when a bond in form of a Stock Certificate is lost etc.**
- (1) Every application for the issue of a duplicate stock certificate, in place of a stock certificate which is alleged to have been lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced either wholly or in part shall be addressed to the office of issue and shall be accompanied by :—
- (a) the Post Office registration receipt of the letter containing the stock certificate if the same was lost in transmission by registered post ;
- (b) a copy of the police report, if the loss or theft was reported to the police ;
- (c) an affidavit sworn before a Magistrate testifying that the applicant is the legal holder of the stock certificate and the stock certificate is neither in his possession nor has it been transferred, pledged or otherwise dealt with by him; and
- (d) any portions or fragments which may remain of the lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced stock certificate.
- (2) The circumstances attending the loss shall be stated in the application.
- (3) The prescribed officer shall, if he is satisfied of the loss, theft, destruction, mutilation or defacement of the stock certificate, direct the issue of a duplicate stock certificate in lieu of the original certificate.
- 13. Publication of list :—**
- (1) The list referred to in regulation 11 shall be published half-yearly in the Gazette of India in the months of January and July or as soon afterwards as may be convenient.
- (2) All bonds in respect of which an order has been passed under regulation 11 shall be included in the first list published next after the passing of such order and thereafter such bonds shall continue to be included in every succeeding list until the expiration of four years from the date of first publication.
- (3) The list shall contain the following particulars regarding each bond included therein, namely, the name of the issue, the number of the bond, its value, the name of the person to whom it was issued, the date from which it bears interest, the name of the applicant for a duplicate, the number and date of the order passed by the prescribed officer for payment of interest or issue of a duplicate, and the date of publication of the list in which the bond was first included.
- 14. Determination of a mutilated bond as a bond requiring issue of duplicate :**
- It shall be the option of the prescribed officer to treat a bond which has been mutilated or defaced as a bond requiring issue of a duplicate under regulation 11 or a mere renewal under regulation 17.
- 15. When a bond in the form of a promissory note may be required to be renewed :—**
- (1) A holder of a bond in the form of a promissory note may be required by the office of issue to receipt the same for renewal in any of the following cases, namely :—
- (a) if only sufficient room remains on the back of the bond for one further endorsement or if any word is written upon the bond across the existing endorsement or endorsements;
- (b) if the bond is torn or in any way damaged or crowded with writing or unfit, in the opinion of the office of issue ;
- (c) if any endorsement is not clear and distinct or does not indicate the payee or payees, as the case may be, by name or is made otherwise than in one of the endorsement cases on the back of the bond;

- (d) if the interest on the bond has remained undrawn for ten years or more;
- (e) if the interest cages on the reverse of the bond have been completely filled or if the vacant printed cages on the reverse of bond do not correspond with the half years for which interest has become due on the date when the bond is presented for drawal of interest;
- (f) if the bond having been enframed three times for payment of interest is presented for re-enframing, and
- (g) if in the opinion of the office of issue, the title of the person presenting the bond for payment of interest is irregular or not fully proved.

(2) When requisition for renewal of a bond has been made under sub-regulation (1) payment of any further interest thereon shall be refused until it is receipted for renewal and actually renewed.

#### 16. Person whose title to a bond of a deceased sole holder may be recognised :—

- (1) The executors or administrators of a deceased sole holder of a bond (whether a Hindu, Mohammedan, Parsi or otherwise) and the holder of a succession certificate issued under Part X of the Indian Succession Act, 1925 (39 of 1925) in respect of the bond shall be the only persons who may be recognised by the office of issue (subject to any general or special instructions of the prescribed officer) as having any title to the bond.
- (2) Notwithstanding anything contained in Section 45 of the Indian Contract Act, 1872 (9 of 1872), in the case of a bond issued, sold or held payable to two or more holders, the survivors or survivor and on the death of the last survivor, his executors, administrators, or any person who is the holder of a succession certificate in respect of such bond shall be the only person who may be recognised by the office of issue (subject to any general or special instructions of the prescribed officer) as having any title to the bond.
- (3) The office of the issue shall not be bound to recognise such executors or administrators unless they shall have obtained probate or letters of Administration or other legal representation as the case may be from a competent court or office in India, having effect at the place of situation of the office of issue. Provided nevertheless that in any case where the prescribed officer shall in his absolute discretion think fit, it shall be lawful for him to dispense with the production of probate, letters of administration or other legal representation upon such terms as to indemnity or otherwise as he may think fit.

#### 17. Receipt for renewal etc. :

- (1) Subject to any general or special instructions of the prescribed officer, the office of issue may, by its order, on the application of the holder:—
  - (a) on his delivering the bond or bonds in the form of promissory note or notes and on his satisfying the office of issue regarding the justice of his claim, renew, sub-divide or consolidate the note or notes provided the note or notes has or have been receipted in Form VI, VII or VIII as the case may be, or
  - (b) convert the promissory note or promissory notes into a stock certificate or stock certificates provided the promissory note or promissory notes has or have been endorsed as follows :—  
“Pay to the National Housing Bank”, or
  - (c) renew, sub-divide or consolidate a stock certificate or stock certificates provided the stock certificate or stock certificates has or have been receipted in Form IX, X or XI as the case may be, or
  - (d) convert the stock certificate or stock certificates into promissory note or promissory notes provided the stock certificate or stock certificates has or have been receipted in Form XII, or
  - (e) convert the bonds of one series into those of another provided :
    - (i) inter series conversion is permissible, and
    - (ii) the conditions governing such conversion are complied with.
- (2) The office of issue may, under the orders of prescribed officer, require the applicant for renewal, sub-division or consolidation of a bond under the sub-regulation (1) execute in indemnity in Form XIII with one or more sureties approved by him.

#### 18. Renewal of bond in case of dispute as to title :

Where there is a dispute as to the title to a bond in respect of which an application for renewal has been made, the prescribed officer may:—

- (a) where any party to the dispute has obtained a final decision from a court of competent jurisdiction declaring him to be entitled to such bond, issue a renewed bond in favour of such party, or
- (b) refuse to renew the bond until such a decision has been obtained.

**Explanation :**

For the purpose of this regulation, the expression final decision means a decision which is not appealable or a decision which is appealable but against which no appeal has been filed within the period of limitation allowed by law.

**19. Liability in respect of bond renewed etc.**

When a duplicate bond has been issued under regulation 11 or a renewed bond has been issued or a new bond has been issued upon sub-division or consolidation under regulation 17, in favour of a person, the bond so issued shall be deemed to constitute a new contract between the National Housing Bank and such person and all persons deriving title thereafter through him.

**20. Discharge :**

The National Housing Bank shall be discharged from all liability in respect of the bond or bonds paid on maturity or in place of which a duplicate, renewed, sub-divided or consolidated bond or bonds has or have been issued :—

- (a) in the case of payment, after the lapse of four years from the date on which payment was due,
- (b) in the case of a duplicate bond after the lapse of four years from the date of the publication under regulation 13 of the list in which the bond is first mentioned, or from the date of payment of interest on the original bond, whichever date is later;
- (c) in the case of a renewed bond or of a new bond issued upon sub-division or consolidation after the lapse of four years from the date of issue thereof.

**21. Discharge in respect of interest :**

Save as otherwise expressly provided in the terms of the bond, no person shall be entitled to claim interest on any such bond in respect of any period which has elapsed after the earliest date on which demand could have been made for the payment of the amount due on such bond,

**22. Discharge of a Bond :**

- (a) When a Bond held in the form of promissory note or Stock Certificate becomes due for payment of principal, it shall be presented at the office of the National Housing Bank at which interest thereon is payable or at the office of issue duly signed by the holder on its reverse ;

- (b) When a Bond in the form of an entry in the account becomes due for payment of principal, a duly signed receipt in Form XIV shall be furnished by the holder to the Office of Issue.

**THE SCHEDULE****FORM I**

[See Regulation 3(3)]

**FORM OF TRANSFER**

I/We ..... do hereby assign and transfer my/our interest or share in the inscribed stock of the ..... per cent. National Housing Bank Bonds of ..... amounting to Rs ..... being the amount/a portion of the stock certificate for Rs ..... as specified on the face of this instrument together with the accrued interest thereon unto ..... his/her/their executors, administrators or assigns, and I/We ..... do freely accept the above stock certificate transferred to the extent it has been transferred to me/us.

I/We @..... hereby request that on my/our@being registered as the holder(s) of the stock certificate hereby transferred to me/us, the aforesaid stock certificate(s) to the extent it has been transferred to me/us@ may be renewed in my/our name(s) converted in my/our name(s) converted in my/our name(s)@.

\*\*I/We @ .. . hereby request that on the above transferee(s) being registered as the holder(s)@ of the stock certificate hereby transferred to him/them @; the aforesaid stock certificate to the extent it has not been transferred to him/them@ may be renewed in my/our @name(s).

As witness our hand the..... day of.. One thousand nine hundred and .....

Signed by the above-named  
transferor in the presence  
of\*..... (Transferor) .....

Address.....

Signed by the above named

transferee in the presence (Transferee) .....

of\*..... Address.....

@Omit the alternative which does not apply.

\*\*This paragraph to be used only when a portion of a stock certificate is transferred.

\*Signature, occupation and address of Witness.

## FORM II

[see Regulation 3(4)(c)]

Requisition for conversion of Bond in the form of Promissory Note into an entry in the account with the National Housing Bank.

Date.....19 .....

To :

Manager,  
Bonds Section,  
National Housing Bank,  
Bombay.  
Dear Sir,

Re ..... %National Housing Bank Bonds  
.....(Series).....  
.....

We hereby declare that the National Housing Bank Bonds issued in the form of Promissory Note(s) of the aggregate face value of Rs.....listed on the reverse is/are our property and request that we may please be allowed to hold the same in the form of an entry in the account to be maintained by the Housing Bank in our name for which purpose we are surrendering herewith the relevant bond scrips duly endorsed in favour of the National Housing Bank. The name, designation and specimen signature(s) of the person(s), who has/have been authorised to operate the account are as per details given in the reverse.

In this connection, we are enclosing hereto deed of indemnity in your favour, duly stamped and executed on our behalf as per your draft.

We request you to kindly send to us in due course certificate of holding of bonds in form of an account with the National Housing Bank and periodic statement of our holding at the address given above.

In the meanwhile please acknowledge receipt.

yours faithfully,

Signature(s) of the  
registered holder(s)/  
his duly authorised  
representative .....  
  
Name(s) of registered  
holder(s) .....

## LIST OF BOND SCRIPS ENCLOSED HERETO

Promissory Note(s) in denomination(s) as stated below

1. Bond Scrip No.....dated.....  
or Rs.....(.....Series).
2. Bond Scrip No.....dated..... for  
Rs.....(.....Series).
3. Bond Scrip No.....dated .....for  
Rs.....(.....Series).

Aggregate face value of the Bond Scrips Rs.....  
Specimen Signature(s)..... singly/  
Jointly/Either or Survivor.

Name : 1. .... Designation.....  
2. .... Designation.....  
Address : .....

Telephone : ..... Telex : .....  
Enclosed (i) Bond Scrips for aggregate value of Rs.....

(ii) Deed of Indemnity.

## FORM III

[See Regulation 3(4)(c)]

Requisition or issue of Bond Scrips in lieu of the Bonds held in the form of entry in the account with the National Housing Bank.

To :

Manager,  
Bonds Section,  
National Housing Bank,  
Bombay  
Dear Sir,

Re:.... %National Housing Bank Bond  
.....(.....Series)

We are forwarding herewith the certificate of holding issued by the National Housing Bank in respect of the Bonds held by us in the form of an entry in the account maintained by the National Housing Bank.

We request that our Bond holdings may please be converted and transferred in the form of promissory note(s), as per details given on the reverse.

We request that Bond Scrips in this regard may please be forwarded to us by registered post at our address given above alongwith the fresh certificate of holding in respect of the balance amount of the Bonds that are continued to be held in the form of an entry in the account maintained by the National Housing Bank.

In the meanwhile please acknowledge receipt.

yours faithfully,

Signature(s) of the  
Registered holder(s)  
or his duly authorised  
representative.  
  
Name(s) of the  
Registered holder(s) .....

## Details of promissory notes required

1. Certificate of Holding No.....  
dated..... Rs .....  
(.....Series).
2. Certificate of Holding No.....  
dated..... Rs .....  
(.....Series).
3. Certificate of Holding No.....  
dated..... Rs .....  
(.....Series).

Aggregate face value of Bonds Rs.....of which, please arrange to issue Bonds Scrips in denominations as stated below :

Denominations	Number	Aggregate face value
(1) Rs. 1,000 each ×		= Rs.
(2) Rs. 10,000 each ×		= Rs.

Total.....Scrips of the aggregate Face Value of Rs.....

We request that the balance amount of the Bonds may continue to be held in the form of an entry in the account maintained by the National Housing Bank.

#### FORM IV

[See Regulation 3(4)(g)]

Form of transfer of Bonds in the form of an entry in the account with the National Housing Bank

We, .....as the holder/s of the Bonds in the form of an entry in an account with the National Housing Bank do hereby assign and transfer our holding to the extent of Rs.....being the entire/portion of our Bond holding together with accrued interest thereon upto.....to and in favour of.....

We,.....do freely accept the transfer of the above Bonds to our name.

Witness our hand this.. .... day of.....19.....

Signed by the above named..... (Seller) in the presence of.....

Signed by the above named..... (Buyer) in the presence of.....

Note : To be stamped in accordance with Article 62(c) of the Indian Stamp Act, 1899 (as amended by the local Stamp Act of the State in which it is executed).

#### FORM V

[See Regulation 5(2)(b)(iii)]

Form of receipt for renewal of a bond issued in the form of a stock certificate.

Received in lieu hereof a renewed stock certificate of the ..... per cent National Housing Bank Bonds.....for Rs.....in favour of.....with interest payable by the National Housing Bank.....Signature of the registered holder duly authorised representative of

(Name of the registered holder).....

#### FORM VI

[See Regulation 17(1)(a)]

Form of endorsement for renewal of a bond in the form of a promissory note.

Received in lieu hereof, a renewed promissory note payable to (name of holder).....

with interest payable by the National Housing Bank.....  
.....  
Signature of the holder/duly authorised representative of  
(Name of holder).....

#### FORM VII

[See Regulation 17(1)(a)]

Form of endorsement of sub-division of a bond in the form of a promissory note

Received in lieu hereof..... promissory notes for Rs..... respectively payable to (name of holder)..... with interest payable by the National Housing Bank.....

Signature of the holder/duly authorised representative of (Name of the holder)

#### FORM VIII

[See Regulation 17(1)(a)]

Form of endorsement for consolidation of bonds in the form of promissory notes

Received in lieu hereof a new promissory note payable to (name of holder)..... for Rs.....by consolidation with promissory note or promissory notes numbers..... (mentioning the numbers and amounts of the other promissory notes desired to be consolidated with it and specifying the issue with interest payable by the National Housing Bank.....

Signature of the holder/duly authorised representative of

(Name of the holder).....

#### FORM IX

[See Regulation 17(1)(c)]

Form of endorsement for renewal of a stock certificate  
“Received in lieu hereof a renewed stock certificate of the ....., per cent National Housing Bank Bonds..... for Rs..... in the name of ..... with interest payable by the National Housing Bank.....”

Signature of the registered holder/duly authorised representative of (Name of the registered holder).....

#### FORM X

[See Regulation 17(1)(c)]

Form of endorsement for sub-division of a stock certificate

Received in lieu of this stock certificate..... stock certificates for Rs.....respectively of the ..... per cent National Housing Bank Bonds with interest payable by the National Housing

Signature of the registered holder /duly authorised representative of (Name of the registered holder).....

### FORM XI

[See Regulation 17(1) (c)]

Form of endorsement for consolidation of stock certificates

Received in lieu of stock certificates Nos. .... for Rs. .... respectively of the ..... percent, National Housing Bank Bonds..... a stock certificate for Rs. .... of the ..... percent National Housing Bank Bonds..... with interest payable by the National Housing Bank.....

Signature of the registered holder/duly authorised representative of (Name of the registered holder).....

### FORM XII

[See Regulation 17(1)(d)]

Form of endorsement for conversion of stock certificates into promissory notes

Received in lieu of this certificate..... promissory notes of Rs. .... each (together with a new stock certificate for the balance amounting to Rs. ....) with interest payable by the National Housing Bank.

Signature of the registered holder/duly authorised representative of (Name of the registered holder).....

### FORM XIII

[See Regulation 17(2)]

Know all men by these presents that

we..... son of.....  
(Name of Principal)

Resident of..... and  
..... Son of.....  
(surety No 1)

Resident of..... and.....  
..... Son of.....  
(surety on 2)

hereby bind ourselves and each of us, and each of our heirs, executors, administrators and representatives and all of them jointly and severally to the National Housing Bank as established under the National Housing Bank Act, 1987 hereinafter referred to as "the said National Housing Bank" for payment of the sum of Rs. .... to the said National Housing Bank, its certain attorneys, successors and assigns.

And I/each of us the said.....  
(Name of Principal)

and..... hereby covenant with  
(name of surety/sureties)

the said National Housing Bank that if any suit shall be brought touching the subject matter of this obligation of the condition hereunder written in any court subordinate to the High Court of Judicature at Bombay, the same, may at the, 2124 GI/89

instance of the said Housing Bank whoever may be a party to such suit be removed unto, tried and determined by the said High Court in its extraordinary original civil jurisdiction at Bombay.

Whereas the said..... has applied  
(name of Principal)

to the said Housing Bank, for the renewal/consolidation/sub-division of Bond(s) issued by the said Housing Bank mentioned in the schedule hereto.

And whereas the said Housing Bank has consented and agreed to accept the said application on the said.....

.....with two good and sufficient  
(name of Principal)

sureties entering into and executing the above written bond subject to the condition hereunder written.

And whereas the above bounden.....

..... at the request  
(name of Surety/Sureties)

of the said.....  
(name of Principal)

has/have agreed to become surety/sureties for.....  
.....(name of Principal)

and to join with the said..... in executing  
(name of Principal)

the above written bond. Now the condition of the above Bond is such that if the above bounden.....

.....(name of the  
.....and.....or each of  
Principal) (name of Surety/Sureties)

them or their heirs, executors, administrators or representatives or any or either of them shall from time to time and at all times hereafter effectually save, defend, keep harmless and indemnified the said National Housing Bank from and against the claims and demands of all persons claiming to be entitled to the Bond(s) issued by the said National Housing Bank mentioned in the schedules hereto or to any interest thereon and of other persons whosoever in respect of the said Bond(s) or the renewal thereof or the payment of interest thereon and from and against all damages, losses, charges and expenses which the said Housing Bank may sustain, incur or be liable to for or in consequence of any such claim or demand or by reason of the issue of renewed Bond(s) as aforesaid or the payment of any interest due on the said Bond(s) or renewed Bond(s) then the above written bond shall be void but otherwise the same shall remain in full force and effect.

Signed and delivered by..... in the  
(name of Principal)

presence of..... and of.....

Date :

The schedule herein referred to

Nature and description of the Bond	Number	Date of issue	Amount
--	--------	------------------	--------

## FORM XIV

[See Regulation 22(b)]

Form of discharge for the Bonds held in the form of entry in the account with the National Housing Bank

To :

Manager,  
Bonds Section,  
National Housing Bank,  
Bombay

Dear Sir,

:.....% National Housing Bank  
Bond(s).....(..... Series)  
.....

Received the principal amount with accrued interest on the date of maturity on the Captioned Bond(s) of the nominal face value of Rs. ....  
(Rupees.....only) held in form of an entry in the books of the National Housing

Bank to the Credit of.....(bond holder).  
It is certified that the nominal amount of the Bond(s) and the accrued interest as on the date of maturity agree with my/our books.

Yours faithfully,

Signature of the  
registered holder(s)/  
his duly authorised  
representative .....

Name(s) of registered holder(s).....

Place:

[F. No. 7(12)/89-CP]

K.S. SASTRY, Chairman  
(National Housing Bank)